भृगुसूत्रम्

श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस प्रकाशन बम्बई.

श्रीविश्वनाथोविजयति

श्रीमन्महर्षिभृगुप्रणीतम्

भृगुसूत्रम्

★

रतलाम मण्डलान्तर्गत सुखेड़ा ग्रामनिवासी, काशीस्थ
गवर्नमेण्ट संस्कृत महाविद्यालय परीक्षोत्तीर्ण,
स्व० पं० श्री रेवाशंकरात्मज राजज्योतिषी,
रमल शास्त्री, अग्निहोत्री "नागदा"

पण्डित श्री सिद्धनाथशर्मकृत-
सरलहिन्दीभाषाटीकासहितम्
जन्मपत्रफलोपयोगी

मुद्रक व प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष—" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्–प्रेस,
बंबई.

संवत् २०१७ सन् १९६०

" धर्माधिकारपत्रमिदम् "

॥ श्रीमच्छंकरोविजयतेतराम् ॥

स्टेटग्वालियर.
मुकाम सुखेड़ा.

तारीख ८।३।३६
जा० नं ११७

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य पदवाक्य प्रमाण पारावारीण यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहारध्यानधारणा समाध्यष्टङ्गयोगाचरण निरूपित चक्रवर्तित्याद्यनाद्यनवच्छिन्नगुरुपरम्परा प्राप्त सकलवैभव निगमागमाखिल वेदान्तानुभवाद्धिगताद्वैतभाव संजातशुद्धान्तःकरण युक्त वैदिकमार्गप्रवर्तक श्रीकैलासक्षेत्रस्थित सुवर्ण हीरामणि माणिक्य मौक्तिक विलसन्मण्डप सिंहासनारूढ श्रीविष्णुप्रयागतीरनिवास सर्वतन्त्र स्वतन्त्र श्रीगुरुचरण कमलोपासनसंलब्ध श्रीमत्सुधन्वनः साम्राज्य प्रतिष्ठापनाचार्य श्रीमत् त्रोटकाचार्य परम्पराप्राप्त श्रीमन्महाराजाधिराजत्व विशिष्टज्योतिर्मठाधिपत्य षड्दर्शनस्थापनाचार्यऽ अखण्डभूमण्डलाचार्य जगद्गुरु श्रीनगर महास्थान राजधानी युक्त श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीशङ्कराचार्य श्रीविश्वेश्वरानन्द करकमल संजाताभिषेकज्योतिर्मठाधीश्वर श्री १०८ श्री श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीसदानन्दगिरिस्वामिभिःप्रणीताः ।

मूलस्थान—बद्रिकाश्रम अवांतरसंस्थान भानपुरा, स्टेट इन्दौर

स्वस्ति श्रीमत् परम शिष्योत्तम दयादान दाक्षिण्याद्यनेक सद्गुण गणालंकृत वेद विहित नित्य नैमित्तिक कर्मानुष्ठान तत्पर सकल निगमागम पारावारप्रवीण श्रीमच्छंकर चरण कमलार्चन तत्पर धर्मधुरन्धर राजज्योतिषी रमलशास्त्री पं० सिद्धनाथ अग्नि होत्री सुखेड़ा निवासीको ॐनमो नारायण स्मरण पूर्वक " पुत्र पौत्राद्यखिलश्रिरस्त्वीत्याशीर्वादाःप्रतिदिनंसमुल्लसतुतराम् " ।

श्रीविश्वनाथोविजयति

श्रीमन्महर्षिभृगुप्रणीतम्

भृगुसूत्रम्

★

रतलाम मण्डलान्तर्गत सुखेड़ा ग्रामनिवासी, काशीस्थ
गवर्नमेण्ट संस्कृत महाविद्यालय परीक्षोत्तीर्ण,
स्व० पं० श्री रेवाशंकरात्मज राजज्योतिषी,
रमल शास्त्री, अग्निहोत्री "नागदा"
पण्डित श्री सिद्धनाथशर्मकृत-

सरलहिन्दीभाषाटीकासहितम्

जन्मपत्रफलोपयोगी

मुद्रक व प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-" श्रीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस,

बंबई.

संवत् २०१७ सन् १९६०

विशेष श्रीशङ्करस्वामी सच्चिदानन्दगिरि महाराजका शुभागमन मुकाम सुखेड़ामें मिति फाल्गुन शुक्लात्रयोदशी गुरुवार सं० १९९२ को हुआ, और समस्त ब्रह्म समाजने आचार्य श्रीकास्वागत पूर्णरूपसे किया, परन्तु इस प्रान्तके विप्रवर्ग विद्या व ब्रह्म कर्मसे हीन दृष्टि गोचर हुए यद्यपि आप धार्मिक शिक्षा तनमनसे दे रहे हैं तथापि द्रव्या भावके कारण विद्यालयगिरी स्थितिमें है यह पूर्ति भगवान् कैलास-वासी शङ्कर अवश्य शीघ्र पूर्ण करेगा।

हम आपके अतुल परिश्रमको देखकर धन्यवाद देते हुए साथमें सहर्ष यह भी आज्ञा प्रदान करते हैं कि आप अपने सत्कार्य पर अटल-बने रहें तथा ब्राह्मणोंके षट् कर्म व कर्मकाण्डको शिक्षा सम्पूर्ण विप्र कुमारोंको देकर सनातन धर्मका प्रचार करें व यथा शास्त्र धर्माधर्म विवेचनपूर्वक प्रायश्चितका भी आप निर्णय करके सन्मार्ग बताते रहें।

समस्त प्रिय विप्रमण्डलीको शुभाशीर्वादके साथ प्रेमपूर्वक सूचित किये जाते हैं कि आप लोग स्वधर्म (संध्योपासनादिक नित्यकर्म व) धर्म सम्बन्धी निर्णय गायत्री उपदेश व धर्म मर्यादा कायम रहे ऐसे समग्र शास्त्रोक्त वचन उक्त पण्डितजीसे सहर्ष ग्रहण किया करें।

इस गुरु आज्ञाका पालन प्रत्येक शिखा सूत्रधारी सानन्द पूर्वक स्वीकृत कर ब्रह्मकर्म और स्वधर्मकी रक्षा करेंगे। इतिशम्।

महाराजा श्रीजीकी आज्ञासे—**अनेक आशीर्वादाः।**

Secretary
H. H. Jyotirmathadipati Shreemat Jaganguru
Shree Shankaracharya

उपाधिपत्रमिदम्

ॐ

श्रीचन्द्र संस्कृत महाविद्यालयस्य—

प्रमाणपत्रमिदम्

आसभैरवम्, काशी

मन्दसोर मण्डलान्तर्गत सुखेड़ा ग्राम निवासिनो माननीय पण्डित रेवाशङ्कर भट्टस्यात्मजः श्रीपण्डित सिद्धनाथ शर्मा ।

अयमेक विंशति वर्षेऽस्मद्विद्यालये व्याकरण, काव्य, कोश, ज्योतिषे, रमलशास्त्रादीन्यध्यीत्य समीचीनं नैपुण्यं गतः ।

अतोऽस्मैशीलवते " ज्योतिषरत्न " रमल शास्त्री चेत्युपाधिनाऽलंकृत्वेदं प्रमाणपत्रं प्रदीयते ।

विक्रमाब्दीये—
१९८८ श्रावण मासे
शुक्लपक्षे—एकादश्याम्
चन्द्रवासरे, तदनुसारे
ता० २४।८।३१ ईशवीये

वेदान्तकेसरी—
ह: स्वामि दर्शनानन्दस्य श्रीचन्द्र-
संस्कृत महाविद्यालयाध्यक्षस्य,
आस भैरवं, काशी.

मानपत्रमिदम्

ॐ

श्रीगायत्री-रुद्र-दुर्गा-महायज्ञसमितिपेटलावद, जिला झाबुआ. मध्यप्रदेशद्वारा समर्पित

" सन्मान-पत्र "

यह सम्मान-पत्र समर्पण करते हुए समितिको महान्‌हर्ष है कि रतलाम मण्डलान्तर्गत सुखेडानिवासी श्रीमान् माननीय पूज्य पंण्डित श्रीसिद्धनाथजी शास्त्री राज-ज्योतिषीने यहां के श्रीगायत्री-रुद्र-दुर्गा महायज्ञको २५ विद्वानोंके साथ बड़े समारोह पूर्वक, आचार्य पदको सुशोभित कर वेद ध्वनि, एवं शास्त्रोक्त विधि विधानसे परिश्रम पूर्वक निर्विघ्न सम्पादन किया।

जिससे चारों ओरसे दूर दूरसे आई हुई असंख्य जनता श्रीयज्ञ-नारायण भगवान्‌के अपूर्व दर्शन कर परममुग्ध होकर कृतार्थ हुई। अतः आपकी इस सराहनीय पुनीत सेवासे समिति परम प्रसन्न होकर यह " सन्मानपत्र " सादर समर्पित करती है। इति।

यज्ञ-स्थलः
श्री नीलकण्ठेश्वर महादेव-
मंदिर, पेटलावद
वै. शु. १० गु. वि.सं.२०१४

हः फतेराम गंगाराम सोना,
यज्ञाध्यक्षः
महायज्ञ-समिति, पेटलावद

सोमेश्वर चतुर्वेदी, बी० टी० सी० विशारद
मन्त्रीः
महायज्ञ-समिति, पेटलावद, मण्डल झाबुआ, (म० प्र०)
दिनांक ९-५-१९५७ ई०

श्रीहरिः

विनम्र-निवेदन

अप्रत्यक्षाणिशास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्राकौं यत्र साक्षिणौ ॥ १ ॥

माननीय पाठकमहोदय

प्रायः यह तो सब कोही विदित है कि वेदके छ अंगोंमेंसे " ज्योतिषं नयनं स्मृतम्"इस प्रमाणसे ज्योतिषशास्त्र वेदका छठवां अंगनेत्र माना गया। नेत्रका धर्म संसारकी सम्पूर्ण वस्तुएं देखनेका है। ज्योतिषके तीन स्कन्ध है सिद्धान्त, संहिता, और जातक। सिद्धान्त वह है जो सूक्ष्मगणित द्वारा आकाशमें ग्रह, नक्षत्र, तारा एवं राशि इनके उदय अस्त, योग, ग्रह युद्ध, तथा चन्द्र सूर्य ग्रहणादिका सुस्पष्ट ज्ञान होकर उनसे विश्व भरके अनेक शुभा शुभ फल जाने जाते हैं।

संहिता वह है जो ग्रह बिम्बोंके संयोग वश दिन, रात्रि, समय, अयन, ऋतु, एवं देश विदेशोंमें नाना प्रकारके शुभा शुभ उत्पातादि योग जाने जाते हैं।जातक वह है जो प्रत्येक जीवात्मा अपने२ कर्मानुसार८४लाख योनियोंमें भ्रमण करता हुआ पुनः वह यहां जब जन्म लेता है तो ठीक उसी ही समयके इष्ट लग्न, ग्रह, नक्षत्रादिवश उसके सुख दुःख, लाभ, हानि, भाग्य, आयु आदि जीवनभरके सम्पूर्ण शुभा शुभ फल पूर्णतया जाने जाते हैं।

हमारे प्रातःस्मरणीय त्रिकालज्ञ ऋषिमहर्षियोंने अपने तपो बलके प्रभावसे उपरोक्त यह सब ही भूत भविष्य, वर्तमान तीनों काल प्रत्यक्ष जानकर तथा पूर्ण अनुभव करके इस महान् ज्योतिष शास्त्रकी रचना की है। जिसकी सत्यता की साक्षी आज तक सारे संसारको स्वयं चद्र और सूर्य देते हुए अपनी जगमगाती हुई दिव्य ज्योतिसे प्रकाशका विकास प्रतिक्षण करते जारहे हैं।

उसी ज्योतिष शास्त्रका छोटासा यह महामुनि भृगु रचित'भृगुसूत्र' नामक जातक ग्रन्थ जन्मपत्रीका फल बतानेमें अद्वितीय है।

इसमें तन्वादि द्वादशभाव स्थित सूर्यादि नवग्रहोंके द्वारा शरीरका सुख, धन, भाई माता-पिताका सुख, तथा अरिष्ट, विद्या, रोग शत्रु, स्त्री, भाग्योदय, तीर्थयात्रा, राजभोग और किस वर्षमें धन प्राप्ति, व किस वर्षमें शरीरमें अरिष्टता, एवं आयु आदि अनेकफलसे पूर्णतया ठीक २ ही फलप्रद है।

प्रस्तुत ग्रन्थ "ज्योतिषंगारुढ़ीविद्यापितापुत्रैर्नदीयते" इस लोकोक्त्यानुसार अभीतक अलभ्य एवं अप्रकाशित रहनेसे सर्वजन तथा छात्रवृन्द इससे प्रायः सर्वदा वञ्चित ही रहते थे। मेरे विद्याध्ययन कालमें भगवान् श्रीशंकरजीके प्रसादसे मुझे काशीके एक वृद्ध प्रसिद्ध एवं प्रकाण्डविद्वान् ज्योतिषी द्वारा २०० वर्षका प्राचीन हस्तलिखित केवल मूलमात्र ही प्राप्त हुआ था।

अतः मैंने सर्वोपकारार्थ इसकी सरलहिन्दी भाषाटीका महत्परिश्रमसे बनाकर इस द्वितीय संस्करणमें और भी उचित संशोधन कर ग्रन्थके अन्तमें ग्रहोंका उच्च नीच शत्रु मित्रादिका आवश्यक उपयोगी चक्र और विविध प्रश्नोंके सरलता पूर्वक निर्णय करनेकी चमत्कारिक केरल सिद्ध प्रश्नावलीका संग्रह करके विश्वविख्यात "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई के अध्यक्ष महोदय, श्रेष्ठिवर्य्य श्रीमान् धर्म मूर्ति खेमराज श्रीकृष्णदासजीको यह पुनः पुनः प्रकाशनार्थ राजनियमानुसार सर्वाधिकार पूर्वक सहर्ष सादर समर्पित किया है।

अतएव आशा है ज्योतिष शास्त्रके प्रेमी महानुभावोंको इससे कुछ भी उपकार होगा तो निज परिश्रमको सफल समझूँगा और अन्तमें श्रीविद्वज्जनोंसे करबद्ध विनम्र प्रार्थना है कि भ्रमवश यदि इसमें कोई तरहकी त्रुटि रह गयी होतो कृपया क्षमा प्रदान करेंगे। इति।

विनीतः—

पं० सिद्धनाथ शास्त्री, 'ज्योतिषरत्न रमल शास्त्री'
पो० मु० सुखेड़ा, मण्डल रतलाम (म० प्र०)



पण्डित सिद्धनाथ शास्त्री,

"ज्योतिष रत्न–रमलशास्त्री"

सुखेड़ा, मण्डल रतलाम (म० प्र०)

श्रीः

भृगुसूत्रकी-विषयानुक्रमणिका

विषय.	पृष्ठ.
प्रथमोऽध्यायः	
लग्ने रविफलम्	१
द्वितीये रविफलम्	४
तृतीये रविफलम्	६
चतुर्थे रविफलम्	७
पंचमे रविफलम्	८
षष्ठे रविफलम्	८
सप्तमे रविफलम्	९
अष्टमे रविफलम्	१०
नवमे रविफलम्	११
दशमे रविफलम्	१२
एकादशे रविफलम्	१३
द्वादशे रविफलम्	१४
द्वितीयोऽध्यायः	
लग्ने चन्द्रफलम्	१५
द्वितीये चन्द्रफलम्	१६
तृतीये चन्द्रफलम्	१७
चतुर्थे चन्द्रफलम्	”
पंचमे चन्द्रफलम्	१८
षष्ठे चन्द्रफलम्	१९
सप्तमे चन्द्रफलम्	२०
अष्टमे चन्द्रफलम्	२१
नवमे चन्द्रफलम्	,,
एकादशे चन्द्रफलम्	२३
द्वादशे चन्द्रफलम्	२४
तृतीयोऽध्यायः	
लग्ने भौमफलम्	२४
द्वितीये भौमफलम्	२६
तृतीये भौमफलम्	२६
चतुर्थे भौमफलम्	२७
पंचमे भौमफलम्	२९

विषय.	पृष्ठ.
षष्ठे भौमफलम्	३०
सप्तमे भौमफलम्	३१
अष्टमे भौमफलम्	३२
नवमे भौमफलम्	३३
दशमे भौमफलम्	३३
एकादशे भौमफम्	३५
द्वादशे भौमफलम्	,,
चतुर्थोऽध्यायः	
लग्ने बुधफलम्	३६
द्वितीये बुधफलम्	३८
तृतीये बुधफलम्	३९
चतुर्थे बुधफलम्	४०
पञ्चमे बुधफलम्	४१
षष्ठे बुधफलम्	४१
सप्तमे बुधफलम्	४२
अष्टमे बुधफलम्	४३
नवमे बुधफलम्	४४
दशमे बुधफलम्	,,
एकादशे बुधफलम्	४५
द्वादशे बुधफलम्	४५
पंचमोऽध्यायः	
लग्ने गुरुफलम्	४६
द्वितीये गुरुफलम्	४७
तृतीये गुरुफलम्	४८
चतुर्थे गुरुफलम्	४९
पंचमे गुरुफलम्	५०
षष्ठे गुरुफलम्	५१
सप्तमे गुरुफलम्	५१
अष्टमे गुरुफलम्	५२
नवमे गुरुफलम्	५३
दशमे गुरुफलम्	५४
एकादशे गुरुफलम्	५४
द्वादशे गुरुफलम्	५५
षष्ठोऽध्यायः ।	
लग्ने भृगुफलम्	५६
द्वितीये भृगुफलम्	५७

विषय.	पृष्ठ.
तृतीये भृगुफलम्	५८
चतुर्थे भृगुफलम्	५९
पंचमे भृगुफलम्	६०
षष्ठे भृगुफलम्	६१
सप्तमे भृगुफलम्	६१
अष्टमे भृगुफलम्	६२
नवमे भृगुफलम्	६३
दशमे भृगुफलम्	६४
एकादशे भृगुफलम्	,,
द्वादशे भृगुफलम्	६५
सप्तमोऽध्यायः	
लग्ने शनिफलम्	६६
द्वितीये शनिफलम्	६६
तृतीये शनिफलम्	६७
चतुर्थे शनिफलम्	६७
पञ्चमे शनिफलम्	६८
षष्ठे शनिफलम्	६९
सप्तमे शनिफलम्	,,
अष्टमे शनिफलम्	७०
नवमे शनिफलम्	७१
दशमे शनिफलम्	७१
एकादशे शनिफलम्	,,
द्वादशे शनिफलम्	७२
अष्टमोऽध्यायः	
लग्ने राहुकेत्वोःफलम्	७३
द्वितीये राहुकेत्वोः फलम्	७३
तृतीये राहुकेत्वोः फलम्	७३
चतुर्थे राहुकेतुफलम्	७४
पञ्चमे राहुकेत्वोः फलम्	७४
षष्ठे राहुकेत्वोः फलम्	७५
सप्तमे राहुकेत्वोः फलम्	७५
अष्टमे राहुकेत्वोः फलम्	,,

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
नवमे राहुकेत्वोः फलम्	७६	द्वादशे राहुकेत्वोः फलम्	७७
दशमे राहुकेत्वोः फलम्	,,	टीकाकारपरिचयः	,,
एकादशे राहुकेत्वोः फलम्	७७	टीकासमाप्तिसमयः	,,

इति भृगुसूत्रकी विषयानुक्रमणिका समाप्ता

श्रीः

श्रीमहर्षिभृगुविरचितम्.

भृगुसूत्रम्

हिन्दीटीकासहितम्

★

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितरविफलमाह

तत्रादौ लग्ने रविफलम्—

आरोग्यं भवति ॥ १ ॥ पित्तप्रकृतिः नेत्ररोगी ॥ २ ॥ मेधावी सदाचारो वा ॥ ३ ॥ उष्णोदरवान् ॥ ४ ॥ मूर्खः पुत्रहीनः ॥ ५ ॥ तीक्ष्णबुद्धिः ॥ ६ ॥ अल्पभाषी प्रवासशीलः सुखी ॥ ७ ॥ स्वोच्चे कीर्तिमान् ॥ ८ ॥ बलिनिरीक्षिते विद्वान् ॥ ९ ॥ नीचे प्रतापवान् ॥ १० ॥ ज्ञानद्वेषी दरिद्रः अन्धकः ॥ ११ ॥ शुभदृष्टे न दोषः ॥ १२ ॥ सिंहे स्वांशे नाथः ॥ १३ ॥ कुलीरे ज्ञानवान् ॥ १४ ॥

रोगी बुद्बुदाक्षः ॥ १५ ॥ मकरे हृद्रोगी ॥ १६ ॥ मीने स्त्रीजनसेवी ॥ १७ ॥ कन्यायां रवौ कन्याप्रजः दारहीनः कृतघ्नश्च ॥ १८ ॥ क्षेत्री शुभयुक्तः आरोग्यवान् ॥ १९ ॥ पापयुते शत्रुनीचक्षेत्रे तृतीये वर्षे ज्वरपीडा ॥ २० ॥ शुभदृष्टे न दोषः ॥ २१ ॥

अथटीकाकारःस्वेष्टदेवनमस्कारमाचष्टे–

श्रीपार्वतीपतिं नत्वा गुरुं चैव सरस्वतीम् ।
सिद्धप्रभकारीनाम्नी टीकेयं रच्यते मया ॥
जनानां रञ्जनार्थाय दैवज्ञानां हिताय च ।
यस्या विज्ञानमात्रेण दैवज्ञो ज़ायते ध्रुवम् ॥

सूर्य जन्म लग्नमें हो तो निरोग्य होता है। पित्तप्रकृती और नेत्रमें रोगवाला हो। बुद्धिमान् और अच्छा आचरण करनेवाला हो। जठराग्नि तेज हो, ज्ञानसे हीन और पुत्रसे हीन हो। तीक्ष्णबुद्धिवाला हो। थोडा बोलनेवाला, परदेशमें घूमनेवाला और सुखी हो। यदि सूर्य अपनी उच्च राशि (मेषराशि) में हो तो वह तो कीर्त्तिवाला होता है। बलवान् ग्रह देखते हों तो पण्डित होता है। यदि सूर्य नीच (तुलाराशि) में हो तो तेजस्वी होता है। और ज्ञानसे

वैर करनेवाला, दरिद्र और काणा होता है । शुभ ग्रहकी दृष्टि होनेपर उक्त, अनिष्ट फल दूर हो जाते हैं। सूर्य सिंह राशिमें अथवा सिंहके नवांशमें हो तो किसी स्थानका अधिपति-होताहै । कर्क राशिमें हो तो ज्ञानी हो। और शरीरमें रोग तथा फोडा फून्सीवाला हो। मकर सूर्य राशिमें हो तो हृदयमें रोग हो । मीन राशिमें हो तो स्त्रियोंकी सेवा करनेवाला हो। कन्या राशिमें सूर्य हो तो कन्या उत्पन्न करनेवाला हो, और स्त्रीसे हीन तथा किये हुए उपकारको नाश करनेवाला हो। सूर्य अपनी राशि (सिंहराशि) का हो तो अथवा शुभग्रहयुक्त हो तो आरोग्य होता-है । सूर्यके साथ पाप ग्रह बैठे हों और शत्रु तथा नीच ग्रहके घरमें हो तो ३ वर्षमें ज्वरसे कष्ट हो। शुभ ग्रहोंके देखनेपर ये दुष्टफल नहीं होता है ॥ १–२१ ॥

"अत्रोदाहरणम "—

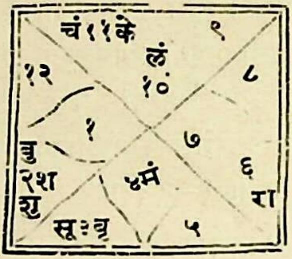
॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीशुभ सम्वत् १९९९ शके १८६४ प्रवर्त्तमाने रविरुत्तरायणगते, ग्रीष्मऋतौ, मासोत्तमे–आषाढ मासे कृष्णपक्षे, चतुर्थ्याम् सह पञ्चम्यां तिथौ गुरुवासरे ५।५७ धनिष्ठो-परिशतभिषानक्षत्रे, १७-५१ प्रीत्युपरि आयुष्यमान् योगे ४६-३१ तत्रश्रीसूर्योदयादिष्ट घट्यादि ३७।५ सूर्यः २-१६ लग्नस्पष्टः ९-८-५२-० दिनमानम् ३३-२३ रात्रिमानम् २६-३७ अहोरात्रम्

६०-० भयातम् १७-४६ भभोगः ५८-३२ मकरलग्नोदये श्री सकल कल्याणवती शुभ वेलायाम् सुखेड़ाग्रामवास्तव्यः पण्डित श्री सिद्धनाथशास्त्रिणः गृहे चि० पुत्र रत्न जन्मः। चरणभेदेन जन्मनाम "शिवकुमारः" इतिप्रतिष्ठितंराशि कुम्भः। स्वामी मन्दश्च।

आङ्लमतेन जन्मतिथ्यादिकंच (दिनांक २,७,१९४२ ईशवीये)

श्रीः जन्मकुण्डलीचक्रमिदम्

श्री शुभम्



कल्याणंभवतु

लग्नादद्वितीये रविफलम्

मुखरोगी ॥ २२ ॥ पञ्चविंशतिवर्षे राजदण्डेन द्रव्यच्छेदः ॥ २३ ॥ उच्चे स्वक्षेत्रे वा न दोषः ॥ २४ ॥ पापयुते नेत्ररोगी ॥ २५ ॥ स्वल्पविद्वान् रोगी ॥ २६ ॥ शुभवीक्षिते धनवान् दोषादीन् व्यप-

हरति ॥ २७ ॥ नेत्रसौख्यम् ॥ २८ ॥ स्वोच्चे स्वक्षेत्रे वा बहुधनवान् ॥ २९ ॥ बुधयुते पवनवाक् ॥ ३० ॥ धनाधिपः स्वोच्चे वाग्मी ॥ ३१ ॥ शास्त्रज्ञः ज्ञानवान् नेत्रसौख्यम् राजयोगश्च ॥ ३२ ॥

लग्नसे द्वितीय स्थानमें सूर्य हो तो मुखमें रोग हो । २५ वें वर्षमें राजाके दण्डसे धनका नाश हो । यदि सूर्य उच्च (मेष) में हो अथवा अपने स्थान (सिंहराशि) में हो तो यह उक्तदोष नहीं होता है अर्थात् राजदण्डसे धनका नाश नहीं होता है । सूर्यके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो नेत्रमें रोग हो, और थोड़ा शास्त्र जाननेवाला तथा रोगी होता है । सूर्यको यदि शुभ ग्रह देखते हों तो धनी हो और इन अनिष्ट फलोंका नाश होता है। और नेत्रका पूर्ण सुख हो । सूर्य अपने उच्च (मेष) में तथा अपने स्थान (सिंह) में हो तो बडा धनो हो । सूर्यके साथ बुध हो तो रुक २ कर बोलनेवाला हो । द्वितीय स्थानका स्वामी उच्च (मेष) में हो तो चञ्चल वाणी बोलनेवाला हो । शास्त्र जाननेवाला, ज्ञानवान् नेत्रका सुखी, और राजयोगवाला होता है ॥ २२–३२ ॥

लग्नात्तृतीये रविफलम्

बुद्धिमान् अनुजरहितः ज्येष्ठनाशः ॥३३॥ पञ्चमे वर्षे चतुरष्टद्वादशवर्षे वा किञ्चित्पीडा ॥३४॥ पापयुते क्रूरकर्ता ॥ ३५ ॥ द्विभ्रातृमान् पराक्रमी ॥ ३६ ॥ युद्धे शूरश्च ॥३७॥ कीर्त्तिमान् निजधनभोगी ॥३८॥ शुभयुते सोदरवृद्धिः॥३९॥भावाधिपे बलयुते भ्रातृदीर्घायुः ॥४०॥ पापयुते पापेक्षणवशान्नाशः ॥४१॥ शुभवीक्षण-वशाद्धनवान् भोगी सुखी च ॥ ४२ ॥

लग्नसे तीसरेघर में सूर्य हो तो बुद्धिमान्, छोटे भाईसे हीन, और बडे भाई मर जाते हैं। ५ वर्षमें अथवा ४-८-१२-वर्षमें कुछ शरीरमें पीडा हो। सूर्य पाप-ग्रहसे युक्त हो तो नीच कर्म करनेवाला हो। और दो भ्राता-वाला हो एवं तेजस्वी होता है। संग्राममें शूर वीर हो कीर्तिवाला और अपने धनको भोगनेवाला होता है। सूर्य शुभ ग्रहसे युक्त हो तो अपने सगे भ्राताकी वृद्धि होती है। तृतीय स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो तो भाइयोंकी दीर्घायु होती है। पापग्रहसे युक्त हो व देखते हो तो भाई का नाश होता है। और शुभ ग्रहोंके देखनेसे धनी सब आनन्द भोगनेवाला और सुखी होता है॥ ३३-४२ ॥

लग्नाच्चतुर्थे रविफलम्

हीनाङ्गः अहंकारी जनविरोधी उष्णदेही मनः-पीडावान् ॥ ४३ ॥ द्वात्रिंशद्वर्षे सर्वकर्मानुकूलवान् ॥४४॥ बहुप्रतिष्ठासिद्धिः सत्तापदवीज्ञान शौर्यसम्पन्नः ॥ ४५ ॥ धनधान्यहीनः ॥ ४६ ॥ भावाधिपे बलयुते स्वक्षेत्रत्रिकोणे केन्द्रे लक्षणापेक्षया आन्दोलिकाप्राप्तिः ॥४७॥ पापयुते पाप वीक्षणवशाद्दुष्टस्थाने दुर्वाहन-सिद्धि॥४८॥क्षेत्रहीनः॥४९॥परगृह एव वासः॥५०॥

लग्नसे चौथे भवनमें सूर्य हो तो अङ्गसे हीन, घमण्डी, मनुष्योंसे कपट करनेवाला, गरम शरीरवाला और चित्त हमेशा कष्टमें हो। ३२ वर्षमें सब कार्योंके अनु-कूल हो। बहुत प्रतिष्ठा सिद्धिवाला, विख्यात पदवीवाला ज्ञान और बलसे युक्त हो। और धनधान्यसे रहित हो। चतुर्थ स्थानका स्वामी बलवान ग्रहोंसे युक्त हो व राशि (सिंह) का हो अथवा ५-९-में व केन्द्र (१-४-७-१०-) इन स्थानोंमें बैठा हो तो चिह्नानुसार पालकी तथा अच्छी २ सवारि प्राप्त हो। यदि पाप ग्रहोंसे युक्त हो व पाप ग्रहकी दृष्टि होनेपर खराब स्थानमें नीच वाहनकी सवारी प्राप्त होवे। मकानसे रहित हो। और सर्वदा दूसरों-के घरमें वास करनेवाला होता है ॥ ४३–५० ॥

लग्नात्पञ्चमे रविफलम्

निर्धनः स्थूलदेही सप्तमे वर्षे पित्ररिष्टवान् ॥ ५१ ॥ मेधावी अल्पपुत्रः बुद्धिमान् ॥ ५२ ॥ भावाधिपे बलयुते पुत्रसिद्धिः ॥ ५३ ॥ राहुकेतुयुते सर्पशापात् सुतक्षयंः ॥५४॥ कुजयुते शत्रुयुते मूलात् ॥५५॥ शुभदृष्टयुते न दोषः ॥ ५६ ॥ सूर्यशरभादिषु भक्तः ॥ ५७ ॥ बलयुते पुत्रसमृद्धिः ॥ ५८ ॥

लग्नसे पांचवेंभाव में सूर्य हो तो कंगाल मोटा-शरीरवाला और ७ वर्षमें पिताको अरिष्ट हो। बुद्धिमान् और अल्प पुत्रवाला हो। पञ्चम स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंके साथ युक्त हो तो पुत्रका पूर्ण सुख होता है। सूर्यके साथ राहु केतु युक्त हों तो नागदेवके शापसे पुत्रका नाश हो। मङ्गल युक्त होनेपर शत्रुके कारणसे पुत्रका नाशहो। सूर्यको शुभ ग्रह देखते अथवा युक्त होने पर ये कुफल न होता अर्थात् पुत्रका सुख होता है। और सूर्य मृग आदि जीवोंमें सेवा करनेवाला हो। सूर्यके साथ बली ग्रह युक्त होने-पर पुत्रकी वृद्धि होती है ॥ ५१–५८ ॥

लग्नात्षष्ठे रविफलम्

अल्पज्ञातिः ॥ ५९ ॥ शत्रुवृद्धिः धनधान्यसमृद्धि

॥ ६० ॥ विंशतिवर्षे नेत्र वैपरीत्यं भवति ॥ ६१ ॥ शुभदृष्टयुते न दोषः ॥६२॥ अहिकाननपारकृन्मन्त्रसेवी ॥६३॥ कीर्तिमान् शोकरोगी महोष्णदेही ॥६४॥ शुभ युते भावाधिपे देहारोग्यम् ॥६५॥ ज्ञातिशत्रुबाहुल्यम् ॥ ६६ ॥ भावाधिपे दुर्बले शत्रुनाशः ॥ ६७ ॥ पितृदुर्बलः ॥ ६८ ॥

लग्नसे छटवें स्थानमें सूर्य हो तो छोटी जातिका हो । शत्रुकी वृद्धि और धनधान्यकी बुद्धि हो । २० वर्षमें नेत्रमें फूला आदि रोग उत्पन्न हो । सूर्यको शुभग्रह देखते हों अथवा युक्त हों तो यह फल नहीं होता है अर्थात् नेत्रका अच्छा सुख होता है । सर्प जंगलको पारकरनेवाला व मन्त्रको जाननेवाला हो । यशवाला, चिन्ताकरनेवाला, रोगी और गरमशरीरवाला होता है । छठे स्थानका स्वामी शुभग्रहके साथ बैठा हो तो शरीर आरोग्य होताहै । जातिमें बहुत शत्रु हों । छठें स्थानका मालिक बलहीन हो तो शत्रुका नाश हो । और पिता कमजोर होताहै ॥ ५९–६८ ॥

लग्नात्सप्तमे रविफलम्

विवाहविलम्बनं स्त्रीद्वेषी परदाररतः दारद्वयवान् ॥ ६९ ॥ पञ्चविंशतिवर्षे देशान्तर-

प्रवेशः ॥ ७० ॥ अभक्ष्यभक्षणः विनोदशीलः दारद्वेषी ॥ ७१ ॥ नाशान्तबुद्धिः ॥ ७२ ॥ स्वर्क्षे बलवति एकदारवान् ॥ ७३ ॥ शत्रुनीचवीक्षिते पापयुते वीक्षणैर्बहुदारवान् ॥ ७४ ॥

लग्नसे सातवें घरमें सूर्य हो तो विवाह विलम्बसे हो स्त्रीसे विरोध करनेवाला, दूसरेकी स्त्रीसे प्रेमकरनेवाला, और दो स्त्री होती हैं। २५ वर्षमें अन्यदेशमें गमन हो, और नहीं खाने योग्य पदार्थका भक्षण हो। नम्रस्वभाववाला हो तथा स्त्रीसे कपट करनेवाला होता है। प्रत्येक कार्यको नष्टकरनेवाली बुद्धि हो सूर्य अपनी राशि (सिंह) का हो और बलवान् होनेपर एक स्त्री हो यदि सूर्यको शत्रु तथा नीच ग्रहकी दृष्टि होने-पर अथवा पाप ग्रह सूर्यके साथ बैठेहों व देखते हों तो बहुत स्त्रियोंवाला होताहै ॥ ६९–७४ ॥

लग्नादष्टमे रविफलम्

अल्पपुत्रः नेत्ररोगी ॥ ७५ ॥ दशमे वर्षे शिरोव्रणी ॥ ७६ ॥ शुभयुतदृष्टे तत्परिहारः ॥ ७७ ॥ अल्पधनवान् गोमहिष्यादिनाशः ॥ ७८ ॥ देहे

रोगः ॥ ७९ ॥ ख्यातिमान् ॥ ८० ॥ भावाधिपे बल-
युते इष्टक्षेत्रवान् ॥८१॥ स्वोच्चे स्वक्षेत्रे दीर्घायुः ८२

लग्नसे आठवेंभावमें सूर्य हो तो थोडे पुत्र और नेत्रमें रोग हो। १०-वर्ष शिरमें घाव हो । सूर्यके साथ शुभ ग्रह युक्त हो अथवा देखते हों तो मस्तकमें घाव नहीं होता है । थोडा धनवाला, और गौ भैंस आदि पशु नाश हो जाते हैं । शरीरमें सर्वदा रोगवाला हो, और प्रसिद्ध होता है । अष्टम स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो तो इच्छानुसार खेतवाला हो । यदि सूर्य उच्च (मेष) का हो व अपने स्थान (सिंह) राशिमें हो तो दीर्घायु होती है ॥ ७५–८२ ॥

लग्नान्नवमे रविफलम्

सूर्यादिदेवता भक्तः ॥८३॥ धार्मिकः अल्पभाग्यः पितृद्वेषी सुतदारवान् स्वोच्चे स्वक्षेत्रे तस्य पिता दीर्घायुः ॥ ८४ ॥ बहुधनवान् तपोध्यानशीलः गुरुदेवताभक्तः ॥ ८५ ॥ नीचारिपापक्षेत्रे पापैर्युते दृष्टे वा पितृनाशः ॥८६॥ शुभयुते वीक्षणवशाद्वा पिता दीर्घायुः ॥८७॥

लग्नसे नौवेंभवनमें सूर्य हो तो सूर्य, शिव आदि देवताओंकी सेवा करनेवाला हो । पुण्य करनेवाला, थोडा भाग्यवाला, और

पितासे विरोध करनेवाला, तथा पुत्र स्त्रीसे युक्त हो, यदि सूर्य उच्चका (मेष) अथवा अपने स्थान (सिंहराशि) में हो तो उसका पिता दीर्घायु होता है। बडा धनाढ्य हो, परमात्माका भजन करनेका स्वभाव हो, और गुरु तथा देवताभक्त होताहै। सूर्य नीच (तुला) का हो शत्रु तथा पापग्रहके घरमें व पाप ग्रह देखते हों व युक्त हो तो पिताका नाश होता है। सूर्य शुभग्रहसे युक्त हो अथवा देखते हों तो पिता दीर्घायु होता है ॥ ८३--८७ ॥

लग्नाद्दशमे रविफलम्

अष्टादशवर्षे विद्याधिकारेण प्रसिद्धो भवति द्रव्यार्जनसमर्थश्च ॥८८॥ दृष्टित्रितः राजप्रियः सत्कर्मरतः राजशूरः ख्यातिमान् ॥८९॥ स्वोच्चे स्वक्षेत्रे बलपरः ॥९०॥ कीर्तिप्रसिद्धः ॥९१॥ तटाकक्षेत्रगोपुरादिब्राह्मणप्रतिष्ठासिद्धिः॥९२॥ पापक्षेत्रे पापयुते पापदृष्टिवशात् कर्मविघ्नकरः ॥ ९३ ॥ दुष्कृतिः ॥९४॥ अनाचारः-दुष्कर्मकृत्पापी ॥ ९५ ॥

लग्नसे दशम स्थानमें सूर्य हो तो १८ वर्षमें विद्याके प्रतापसे प्रसिद्ध होता है और धन प्राप्त करनेमें भी समर्थ होताहै। सूर्यको तीन ग्रह देखते हों तो राजाका प्रिय हो अच्छा कर्म कर

नेवाला, व राज्यमें शूर वीर, और प्रसिद्ध होताहै। सूर्य उच्च (मेष) का अथवा अपने स्थान (सिंह) का हो तो बली होता है। यशसे प्रसिद्ध हो । बावडी स्थान, गौ, ग्राम ब्राह्मण, देवप्रतिष्ठा आदि करानेसे प्रसिद्ध होता है। सूर्य पाप ग्रहके घरमें हो अथवा पाप ग्रहसे युक्त हो व देखते हों तो कोई कार्य करनेमें विघ्न हो। दुष्टकार्य करनेवाला हो। नीच आचरणवाला, भ्रष्टकर्मवाला और पापी होता है ॥ ८८-९५ ॥

लग्नादेकादशे रविफलम्

बहुधान्यवान् पञ्चविंशतिवर्षे वाहनसिद्धिः॥९६॥ धनवाग्जालद्रव्यार्जनसमर्थः प्रभुज्वरितभृत्यजनस्नेहः ॥ ९७॥ पापयुते बहुधान्यव्ययः ॥९८॥ वाहनहीन ॥ ९९॥ स्वक्षेत्रे स्वोच्चे अधिकप्राबल्यम् ॥ १०० ॥ वाहनेशयुते बहुक्षेत्रे वित्ताधिकारः ॥ १०१ ॥ वाहनयोगेन न बहुभाग्यवान् ॥ १०२ ॥

लग्नसे ग्यारहवेंघरमें सूर्य हो तो अत्यन्त धन धान्यवाला हो, २५ वर्षमें सवारी प्राप्त हो। धन, वाणी, और कपटसे धनको उपार्जन करनेमें समर्थ होता है, भयङ्कर ज्वरसे कष्ट हो, और सेवकजनोंपर प्रेम करनेवाला हो। सूर्यके साथ पापग्रह युक्त

हो तो अधिक धन खर्च करनेवाला हो। सवारीसे हीन हो। सूर्य अपने स्थान (सिंह) का अथवा उच्च (मेष) का हो तो अत्यन्त-बलवाला हो, सूर्यके साथ चतुर्थ स्थानका स्वामी युक्त हो तो बहुत स्थानोंमें धनका अधिकार हो। चतुर्थस्थानके स्वामीके साथ हो तो रवि अल्पभाग्यवाला होता है ॥ ९६–१०२ ॥

लग्नाद्द्वादशे रविफलम्

षट्त्रिंशद्वर्षे गुल्मरोगी ॥१०३॥ अपात्रव्ययकारी पतितः धनहानिः ॥१०४॥ गोहत्यादोषकृत् परदेश-वासी ॥ १०५ ॥ भावाधिपे बलयुते वा देवतासिद्धिः ॥ १०६॥ शय्याखट्वाङ्गादि सौख्यम् ॥१०७॥पाप-युते अपात्रव्ययकारी सुखशय्याहीनः ॥ १०८॥ षष्ठे-शयुते कुष्ठरोगयुतः शुभदृष्टियुते निवृत्तिः ॥ १०९ ॥ पापी रोगवृद्धिमान् ॥ ११० ॥

लग्नसे बारहवेंभवनमें सूर्य हो तो ३६ वर्षमें गुल्म रोग हो। नीच स्थानमें खर्च करनेवाला, भ्रष्ट, और धनकी हानि करनेवाला होता है। गोहत्या आदि दोषको करनेवाला, और परदेशमें रहनेवाला होता है। यदि द्वादश स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहसे युक्त हो तो देवताको सिद्धकरनेवाला

होता है. । पलङ्ग आदिसे सुख हो, सूर्यके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो दुष्टस्थानमें खर्च करनेवाला सुख और शय्यासे हीन होता है। सूर्यके साथ षष्ठम स्थानका स्वामी युक्त हो तो कुष्ठरोगवाला हो; सूर्यको शुभ ग्रह देखते हों व युक्त हो तो यह दोष निवृत्त होता है अर्थात् कुष्ठ रोग नहीं होता है। पाप करनेवाला और रोगकी वृद्धि होती है ॥ १०३–११० ॥

इति श्रीभृगुसूत्रे सिद्धप्रभाकरी टीकाभियुक्ते सूर्य-
भावाध्यायनाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितचन्द्रफलमाह

तत्रादौ लग्ने चन्द्रफलम्

रूपलावण्ययुक्तश्चपलः व्याधिना जलाच्चासौख्यः ॥ १ ॥ पञ्चदशवर्षे बहुयात्रावान् ॥ २ ॥ मेषवृषभ कर्कलग्ने चन्द्रे शास्त्रपरः ॥ ३ ॥ धनी सुखी नृपालः मृदुवाक् बुद्धिरहितः मृदुगात्रः बली ॥ ४ ॥ शुभदृष्टे बलवान् ॥ ५ ॥ बुद्धिमान् आरोग्यवान् वागजालकः धनी ॥ ६ ॥ लग्नेशे बलरहिते व्याधिमान् ॥ ७ ॥ शुभदृष्टे आरोग्यवान् ॥ ८ ॥

जबलग्नमें चन्द्रमा हो तो सुन्दर स्वरूपवाला, चंचलरोगसे युक्त और जलसे भय प्राप्त होता है। १५ वर्षमें बहुत यात्रा करनेवाला हो। चन्द्रमा लग्नमें मेष, वृष, कर्क इन राशियोंमें हो तो शास्त्रको जाननेवाला हो। और धनी, सुखी एवं मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला, मधुर वाणी बोलनेवाला बुद्धिसे हीन, व कोमल शरीरवाला, और तेजस्वी होता है। चन्द्रमाको शुभ ग्रह देखते हों तो बली होता है। और बुद्धिमान निरोग्य शरीरवाला, कपटी वाणी बोलनेवाला तथा धनवान् होता है। यदि लग्नका स्वामी बलसे हीन हो तो रोगी होता है। लग्नेशको शुभ ग्रह देखते हों तो आरोग्य होता है॥ १–८ ॥

लग्नाद्द्वितीये चन्द्रफलम्

शोभनवान् बहुप्रतापी धनवान् अल्पसन्तोषी ॥९॥ अष्टादशवर्षे राजद्वारेण सेनाधिपत्ययोगः ॥ १० ॥ पापयुते विद्याहीनः ॥ ११ ॥ शुभयुते बहुविद्याधनवान् ॥ १२ ॥ एकेनैव पूर्णचन्द्रेण संपूर्ण धनवान् ॥१३॥ अनेकविद्यावान् ॥ १४ ॥

लग्नसे द्वितीय स्थानमें चन्द्रमा हो तो सुन्दर अत्यन्त तेजस्वी, धनी, और थोडा सन्तोष करनेवाला हो। १८ वर्षमें राजद्वारमें सेनाका मालिक हो। चन्द्रमाके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो विद्यासे रहित हो। शुभ ग्रह बैठे हों तो बहुत

प्रकारकी विद्यावाला और धनाढ्य होता है, । यदि केवल एकही पूर्ण चन्द्रमा हो तो दूसरेघरमें पूर्ण धनवाला हो और अनेक प्रकार की विद्या जाननेवाला होता है ॥ ९-१४ ॥

लग्नातृतीये चन्द्रफलम्

भगिनीसामान्यः वातशरीरी अन्नहीनः अल्पभाग्यः ॥ १५ ॥ चतुर्विंशतिवर्षे भाविरूपेन राजदण्डेन द्रव्यच्छेदः ॥ १६ ॥ गोमहिष्यादिहीनः ॥ १७ ॥ पिशुनः मेधावी सहोदरवृद्धिः ॥ १८ ॥

लग्नसे तीसरे भवनमें चन्द्रमा हो तो मध्यम वहिन वाला और वातशरीरवाला होता है, तथा अन्नसे हीन एवं मन्दभाग्यका होता है। २४ वर्षमें किसी कार्यके अपराधमें राजाके दण्डसे धननाश हो गौ भैंस आदि पशुओंसे हीन हो चुगली करने वाला बुद्धिवाला और संग भाइयोंकी वृद्धिवाला होता है ॥ १५-१८ ॥

लग्नाच्चतुर्थे चन्द्रफलम्

राज्याभिषिक्तः अश्ववान् क्षीरसमृद्धिः धनधान्यसमृद्धः मातृरोगी ॥ १९ ॥ परस्त्रीस्तनपानकारी ॥ २० ॥ मिष्टान्नसम्पन्नः परस्त्रीलोलः सौख्यवान् ॥ २१ ॥

पूर्णचन्द्रे स्वक्षेत्रे बलवान् मातृदीर्घायुः क्षीणचन्द्रे पापयुते मातृनाशः ॥ २२ ॥ वाहनहीनः बलयुते वाहनसिद्धिः ॥ २३ ॥ भावाधिपे स्वोच्चे अनेकाश्वादिवाहनसिद्धिः ॥ २४ ॥

लग्नसे चौथेभाव में चन्द्रमा हो तो राजयोगी, घोड़ावाला, और दूधकी वृद्धिवाला होता है, तथा धन धान्यसे युक्त और मातारोगवाली हो । पराई स्त्रीके स्तनको पीनेवाला हो । मीठा अन्नसे युक्त दूसरेकी स्त्रीमें आसक्त और सुखी होता है । यदि पूर्णचन्द्रमा अपने स्थान (कर्क) राशिमें हो तो बली व माता दीर्घायु हो यदि पाप ग्रहसे युक्त क्षीण चन्द्रमा हो तो माताका नाश होता है। और वाहनसे रहित हो चन्द्रमा बलवान ग्रहोंसे युक्त हो तो सवारी प्राप्त होवे । चतुर्थ स्थानका स्वामी उच्चमें हो तो अनेक घोड़ेकी सवारी प्राप्त होती है ॥ १९–२४ ॥

लग्नात्पञ्चमे चन्द्रफलम्

स्त्रीदेवतासिद्धिः भार्या रूपवती ॥ २५ ॥ क्वचित् कोपवती ॥ २६ ॥ स्तनमध्ये लाञ्छनं भवति ॥ २७ ॥ चतुष्पादलाभः स्त्रीद्वयं बहुक्षीर-लाभः सत्त्वयुतः बहुश्रमोत्पन्नः चिन्तावान् स्त्रीप्रजावान्

एकपुत्रवान् ॥ २८ ॥ स्त्रीदेवतोपासनावान् ॥ २९ ॥ शुभयुते वीक्षणवशादनुग्रहसमर्थः ॥३०॥ पापयुतेक्षणवशान्निग्रहसमर्थः ॥ ३१ ॥ पूर्णचन्द्रे बलवान् अन्नदानप्रीतिः अनेकबुधप्रसादैश्वर्यसम्पन्नः सत्कर्मकृत् भाग्यसमृद्धः राजयोगी ज्ञानवान् ॥ ३२ ॥

लग्नसे पांचवें घरमें चन्द्रमा हो तो स्त्री और देवताको वशमें करनेवाला तथा सुन्दर स्त्रीवाला होता है। कभी स्त्री क्रोधवाली हो और कुचके बीचमें चिह्न होता है। चतुष्पद जीवोंका लाभ हो व दो स्त्रीवाला तथा अत्यन्त दूधसे युक्त, सत्य बोलनेवाला अधिक परिश्रम करनेवाला रंजस्त्री तथा एक पुत्रवाला हो। स्त्री तथा देवता की सेवा करनेवाला होता है। यदि चन्द्रमाके साथ शुभ ग्रह बैठे हों व देखते हों तो दया करनेमें समर्थ होता है। यदि पाप ग्रह बैठे हों व देखते हो तो दुष्टस्वभावमें समर्थ हो। पूर्णचन्द्रमा पञ्चम स्थानमें हो तो बली और अन्नका दान करनेवाला अनेक विद्वानोंके आशीर्वादसे ऐश्वर्ययुक्त अच्छे कर्म करनेवाला भाग्यवान् राजयोगवाला और ज्ञानी होता है ॥ २५-३२ ॥

लग्नात्षष्ठे चन्द्रफलम्

अधिकदारिद्र्यदेही ॥३३॥ षट्त्रिंशद्वर्षे विधवास-

युते बहुभाग्यवान् ॥ ५० ॥ पितृदीर्घायुः ॥ ५१ ॥ पापयुते पापक्षेत्रे भाग्यहीनः ॥ ५२ ॥ नष्टपितृमातृकः ॥ ५३ ॥

लग्नसे नवम स्थानमें चन्द्रमा हो तो अनेक शास्त्र सुननेवाला और धर्मात्मा होता है। घाट, ग्राम आदि बनानेवाला तथा धर्म करनेवाला हो। पुत्र भाग्यवान् हो। पूर्ण चन्द्रमा हो और बली ग्रहोंसे युक्त हो तो बड़ा भाग्यशाली होता है पिता दीर्घायुवाला होता है। यदि चन्द्रमा पाप ग्रहसे युक्त हो व पापग्रहके घरमें हो तो भाग्यसे हीन हो। और माता पिता नष्ट हो जाते हैं॥४७–५३॥

लग्नाद्दशमे चन्द्रफलम्

विद्यावान् ॥ ५४ ॥ पापयुते सप्तविंशतिवर्षे विधवासङ्गमेन जनविरोधी॥ ५५ ॥ अतिमेधावी॥५६॥ सत्कर्मनिरतः कीर्तिमान् दयावान् ॥ ५७ ॥ भावाधिपे बलयुतेविशेसत्कर्मसिद्धिः ॥ ५८ ॥ पापनिरीक्षिते पापयुते वा दुष्कृतिः ॥ ५९ ॥ कर्मविघ्नकरः॥६०॥

लग्नसे दशवे घरमें चन्द्रमा हो तो विद्यावाला हो चन्द्रमाके साथ पापग्रह हो तो २७ वर्षमें विधवास्त्रीके साथ व्यभिचार करनेसे मनुष्योंका वैरी होता है। और अत्यन्त बुद्धिमान हो। श्रेष्ठ कर्म करनेमें आसक्त, यशवाला और दयालु होता है। दशम स्थानका

स्वामी बलिग्रहोंसे युक्त हो तो अधिक पवित्र कर्म करनेवाला हो। यदि पाप ग्रह देखते हों व पापग्रह युक्त हो तो पाप कर्म करनेवाला हो। और हर कार्यमें विघ्नकरनेवाला होता है ॥ ५४--६० ॥

लग्नादेकादशे चन्द्रफलम्

बहुश्रुतवान् पुत्रवान् उपकारी ॥ ६१ ॥ पञ्चाशद्वर्षे पुत्रर्णबहुप्राबल्ययोगः ॥ ६२ ॥ गुणाढ्यः ॥ ६३ ॥ भावाधिपे बलहीने बहुधन व्ययः ॥ ६४ ॥ बलयुते लाभवान् ॥ ६५ ॥ लाभे चन्द्रे निक्षेपलाभः ॥६६॥ शुक्रयुतेन नरवाहन-योगः ॥ ६७ ॥ बहुविद्यावान् ॥ ६८ ॥ क्षेत्रवान् अनेकजनरक्षणभाग्यवान् ॥ ६९ ॥

लग्नसे ग्यारहवेंभवन में चन्द्रमा हो तो बहुत शास्त्रोंको सुननेवाला, पुत्रवाला, और परोपकारी होता है। ५० वर्षमें पुत्रके ऋणसे छूटनेवाला हो अर्थात् पुत्र प्राप्ति हो। गुणोंसे युक्त हो, एकादश स्थानका स्वामी निर्बल हो तो अत्यन्त धनको खर्च करनेवाला होता है। बली ग्रहोंसे युक्त हो तो बहुत धनका लाभ हो। एकादश स्थानमें चन्द्रमा होनेपर पृथ्वीमें धरीहुई वस्तुका लाभ हो चन्द्रमाके साथ शुक्र बैठा हो तो मनुष्यकी सवारी करनेवाला

हो । और नानाप्रकारकी विद्या पढनेवाला हो । एवं घरवाला, तथा बहुत मनुष्योंकी रक्षा करनेवाला और बडा भाग्यशाली होता है ॥ ६१--६९ ॥

लग्नाद्द्वादशे चन्द्रफलम्

दुर्भोजनः दुष्पात्रव्ययः कोपोद्भवव्यसनसमृद्धिमान् स्त्रीयोगयुक्तः अन्नहीनः ॥ ७० ॥ शुभयुते विद्वान् दयावान् पापशत्रुयुते पापलोकः शुभमित्रयुते श्रेष्ठलोकवान् ॥ ७१ ॥

लग्नसे बारहवेंभावमें चन्द्रमा हो तो खराब भोजन करनेवाला दुष्ट स्थानमें खर्च करनेवाला क्रोधसे कलह करनेवाला व उद्योगसे धनवाला स्त्रीरोगसे युक्त हो और अन्नसे रहित होता है चन्द्रमाके साथ शुभग्रह बैठे हों तो पण्डित और दयालु हो पाप ग्रह व शत्रुयुक्त हो तो नरक जाने वाला हो यति शुभ तथा मित्रग्रह बैठे हों तो स्वर्गलोक जानेवाला होता है ॥ ७०-७१ ॥

इति श्रीभृगुसूत्रे सिद्धप्रभाकरीटीकाभियुक्ते चन्द्र भावाध्यायनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितभौमफलम्

तत्रादौ लग्ने भौमफलम्

देहे व्रणं भवति ॥ १ ॥ दृढगात्रः चौरःभूषकःबृहन्नाभिः

रक्तपाणिः शूरो बलवान् मूर्खः कोपवान् सभानशौर्यः धनवान् चापलवान् चित्ररोगी क्रोधी दुर्जनः ॥ २ ॥ स्वोच्चे स्वक्षेत्रे आरोग्यम् दृढगात्रवान् राजसन्मान-कीर्तिः ॥ ३ ॥ दीर्घायुः ॥४॥ पापशत्रुयुते अल्पायुः ॥ ५ ॥ स्वल्पपुत्रवान् वातशूलादिरोगः दुर्मुखः ॥६॥ स्वोच्चे लग्नक्ष धनवान् ॥ ७ ॥ विद्यावान् नेत्रविलास-वान् ॥८॥ तत्र पापयुते पापक्षेत्रे पापदृष्टियुते नेत्रः रोगः ॥ ९ ॥

जन्मलग्नमें मंगल हो तो शरीरमें घाववाला होता है। मजबूतशरीरवाला चोर अच्छे होने की इच्छावाला बडी नाभि (ढूठा) वाला लाल हाथ तेजस्वी बली, मूर्ख, क्रोधवाला सभामें निर्बली हो धनवान् तथा चञ्चलतावाला नानाप्रकारके चित्रविचित्र रोगवाला क्रोधी और दुष्ट होता है। मङ्गल उच्च (मकर) का हो व अपने स्थान (मेष वृश्चिक) में हो तो शरीर आरोग्य हो पुष्टशरीरवाला राज्यमें सत्कार पानेवाला और यश प्राप्त करनेवाला होता है। एवं दीर्घायु हो। मङ्गलके साथ पाप तथा शत्रु ग्रह बैठे हों तो अल्पायु होती है। थोडे पुत्रवाला व वातशूलादि रोगवाला तथा खराब मुखवाला होता है। यदि मङ्गल उच्च (मकर) का हो तो

धानाढ्य हो, विद्यावाला औ नेत्रका पूर्ण सुखवाला होताहै । मङ्गलके साथ यदि पाप ग्रह बैठे हों पाप ग्रहके घरमें हो अथवा पापग्रह देखते हों तो नेत्रमें रोगवाला होता है ॥१–९॥

लग्नाद्द्वितीये भौमफलम्

विद्याहीनः लाभवान् ॥ १० ॥ षष्ठाधिनपेयुतः तिष्ठति चेन्नेत्रवैपरीत्यं भवति ॥ ११ ॥ शुभदृष्टे परिहारः॥१२॥ स्वोच्चे स्वक्षेत्रे विद्यावान् ॥१३॥ नेत्र विलासः॥१४॥तत्र पापयुतेक्षेत्रे पापदृष्टे नेत्ररोगः॥१५॥

लग्नसे द्वितीय स्थानमें मङ्गल हो तो विद्यासे हीन, और धनका लाभवाला होता है । यदि मंगल छठे स्थानके स्वामीके साथ बैठा हो तो नेत्रमें फूला आदि रोग होता है, यदि मंगलको शुभग्रह देखते हों तो यह उक्त दोष नहीं होता अर्थात् नेत्रका पूर्ण सुख प्राप्त होता है । मंगल उच्च (मकर) में हो व अपने स्थान (मेष वृश्चिक) में हो तो विद्यावाला होता है, और नेत्रका सुखवाला हो । मंगलके साथ पाप ग्रह बैठे हों. व पापग्रहके घरमें हो अथवा पाप ग्रह देखते हों तो नेत्रमें रोगवाला होता है ॥ १० ॥ १५ ॥

लग्नात्तृतीये भौमफलम्

स्वस्त्री व्यभिचारिणी ॥ १६ ॥ शुभदृष्टे न दोष अनुजहीनः ॥१७॥ द्रव्यालाभः ॥१८॥ राहुकेतुयुते

वेश्यासङ्गमः ॥१९॥ भ्रातृद्वेषी क्लेशयुतः सुभंगः ॥२०॥ अल्पसहोदरः ॥२१॥ पापयुते पापवीक्षणेन भ्रातृनाशः ॥२२॥ उच्चस्वक्षेत्रे शुभयुते भ्राता दीर्घायुः धैर्यविक्रमवान् ॥२३॥ युद्धे शूरः ॥२४॥ पापयुते मित्रक्षेत्रे धृतिमान् ॥ २५ ॥

लग्नसे तीसरे घरमें मंगल हो तो उसकी स्त्री व्यभिचार करनेवाली होती है। मंगलको शुभग्रह देखते हों तो उक्त अनिष्टफल नहीं होता है और छोटे भाईसे रहित हो। तथा धनसे हीन होता है। मंगलके साथ राहु केतु बैठे हों तो वेश्या (रण्डी) से भोग करनेवाला हो। और भाईसे कपट करनेवाला, दुःखसे युक्त, सुन्दर भगवाली स्त्रीवाला होता है। एवं थोडे भाईवाला होता है। यदि मंगल पाप ग्रहसे युक्त हो व देखते हों तो भाईका नाश हो। अथवा मंगल उच्च (मकर) राशिमें हो व अपने स्थान (मेष वृश्चिक) में हो तथा शुभग्रहसे युक्त हो तो भाई दीर्घायुवाला व गम्भीर और प्रतापवाला होता है। संग्राममें शूर वीर हो, मंगलके साथ पापग्रह बैठे हों व मित्रके घरमें हो तो धैर्यवाला होता है ॥ १६-- २५ ॥

लग्नाच्चतुर्थे भौमफलम्

गृहच्छिद्रम् ॥ २६ ॥ अष्टमे वर्षे पित्ररिष्टं

मातृरोगी ॥ २७ ॥ सौम्ययुते परगृहवासः ॥ २८ ॥ निरोगशरीरी क्षेत्रहीनः धनधान्यहीनः जीर्ण-गृहवासः ॥ २९ ॥ उच्चे स्वक्षेत्रे शुभयुते मित्रक्षेत्रे वाहनवान् क्षेत्रवान् मातृदीर्घायुः ॥ ३० ॥ नीचर्क्षे पापमृत्युयुते मातृनाशः ॥ ३१ ॥ सौम्ययुते वाहन निष्ठावान् ॥ ३२ ॥ बन्धुजनद्वेषी स्वदेश-परित्यागी वस्त्रहीनः ॥ ३३ ॥

लग्नसे चोथे भवनमें मङ्गल हो तो घरमें कलहवाला हो । ८ वर्षमें पिताको अरिष्ट हो, और माताको रोग होता है । मङ्गलके साथ शुभग्रह बैठे हों तो दूसरेके घरमें रहनेवाला हो । आरोग्य शरीरवाला, घरसे हीन, और धनधान्यसे भी रहित तथा पुराने घरमें रहनेवाला होता, है । मङ्गल उच्च (मकर) में हो व अपने स्थान (मेष वृश्चिक) में हो, अथवा शुभ ग्रहसे युक्त हो, व मित्रके घरमें हो तो सवारीवाला, घरवाला, और माता दीर्घायुवाला होता है । यदि मंगल नीच (कर्क) में हो व पापग्रहसे युक्त हो, अथवा अष्टम स्थानके स्वामीके साथ युक्त हो तो माताका नाश होता है । यदि शुभग्रह युक्त हो तो सवारीकी इच्छा करनेवाला होता है । और भाई तथा कुटुम्बियोंसे वैर करनेवाला, व अपने देशको छोडनेवाला, और वस्त्रसे रहित होता है ॥ २६–३३ ॥

लग्नात्पञ्चमे भौमफलम्

निर्धनः पुत्राभावः दुर्मार्गी राजकोपः ॥ ३४ ॥ षष्ठवर्षे आयुधेन किञ्चिद्दण्डकालः ॥ ३५ ॥ दुर्वासन ज्ञानशीलवान् ॥ ३६ ॥ मायावादी ॥ ३७ ॥ तीक्ष्णधीः ॥ ३८ ॥ उच्चे स्वक्षेत्रे पुत्रसमृद्धिः अन्न दानप्रियः ॥ ३९ ॥ राजाधिकारयोगः शत्रुपीडा ॥ ४० ॥ पापयुते पापक्षेत्रे पुत्रनाशः ॥ ४१ ॥ बुद्धि भ्रंशादिरोगः ॥ ४२ ॥ रन्ध्रेशे पापयुते पापी ॥ ४३ ॥ वीरः ॥ ४४ ॥ दत्तपुत्रयोगः ॥ ४५ ॥

लग्नसे पञ्चम स्थानमें मङ्गल हो तो कंगाल, पुत्रसे हीन, दुष्टमार्गको जानेवाला, और राजासे क्रोध करनेवाला होता है। ६ वर्षमें शस्त्रसे कुछ दण्ड प्राप्त होता है। दुष्ट जगह रहनेवाला, और ज्ञानसे युक्त होता है। और कपट करके बोलनेवाला हो, एवं तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। मंगल उच्च राशि (मकर) व अपने स्थानमें (मेष वृश्चिक) राशिमें हो तो पुत्रकी वृद्धिवाला हो, और अन्नका दान करनेमें बडा चतुर होता है। व राज्यका अधिकार प्राप्त हो, तथा शत्रुसे पीडावाला होता है। यदि मंगलके साथ पाप ग्रह बैठे हों, व पाप ग्रहके घरमें हो तो पुत्रका नाश होता है। और

बुद्धिके भ्रष्ट होनेसे रोगवाला हो। अष्टम स्थानका स्वामी पापग्रह
युक्त हो तो पापी होता है। और तेजस्वी, तथा दूसरेका पु
दत्तक (गोदी) रखनेवाला होता है ॥ ३४--४५ ॥

लग्नात्षष्ठे भौमफलम्

प्रसिद्धः ॥ ४६ ॥ कार्यसमर्थः ॥ ४७ ॥ शत्रुहन्त पुत्रवान् सप्तविंशतिवर्षे कन्यकाश्वादि युत ऊढवा ॥ ४८ ॥ शत्रुक्षयः ४९ ॥ पापर्क्षे पापयुते पापदृ पूर्णफलानि ॥ ५० ॥ वातशूलादिरोगः ॥ ५१ बुधक्षेत्रयुते कुष्ठरोगः ॥५२॥ शुभ दृष्टपरिहारः॥५३

लग्नसे छठेवेंभावमें मंगल हो तो प्रसिद्ध होता है। और प्रत्ये कार्य करनेमें समर्थ हो शत्रुको नष्ट करनेवाला, एवं पुत्रवाला हो २७ वर्षमें कन्या व घोडा आदिसे युक्त हो, अथवा सवारीप चढनेवाला हो तथा शत्रु नाश करनेवाला होता है। मंगल य पाप ग्रहके घरमें हो व पाप ग्रह युक्त हो व देखते हों तो यह पू फल प्राप्त होते हैं। और वात शूल आदि रोगवाला हो। मंग बुधके स्थान (मिथुन कन्या) में हो तो कुष्ठ रोगवाला होता है मंगलको शुभ ग्रह देखते हों तो उक्त अनिष्ट फल नहीं होता ॥ ४६--५३ ॥

लग्नात्सप्तमे भौमफलम्

स्वदारपीडा ॥ ५४ ॥ पापार्ते पापयुतेन च स्वर्क्षे स्वदार हानिः॥ ५५॥ शुभयुते जीवति पत्यौ स्त्रीनाशः ॥ ५६ ॥ विदेशपरः ॥ ५७ ॥ उच्चमित्रस्वक्षेत्रशुभयुते पापक्षेत्रे ईक्षणवशात्कलत्र नाशः ॥ ५८ ॥ अथवा चोरव्यभिचारमूलेन कलत्रान्तरं दुष्टस्त्रीसङ्गः ॥५९॥ भगचुम्बनवान् ॥ ६० ॥ चतुष्पादमैथुनवान् मद्यपानप्रियः ॥ ६१ ॥ मन्दयुते दृष्टे शिश्नचुंबन परः ६२ ॥ केतुयुते रजस्वलास्त्रीसम्भोगी ॥ ६३ ॥ तत्रशत्रुयुते बहुकलत्र-नाशः ॥ ६४ ॥ अवीरः अहंकारी वा शुभदृष्टे न दोषः ॥ ६५ ॥

लग्नसे सातवें भवनमें मंगल हो तो अपनी स्त्री रोगवाली हो। यदि मंगल पाप ग्रहके घरमें हो व अपने स्थान (मेष वृश्चिक) में होतो अपनी स्त्रीका नाश हो। शुभग्रह युक्त हो तो जीते हुए पतिके स्त्रीका नाश हो और परदेशमें घूमनेवाला होता है मंगल उच्च (मकर) का हो, व मित्र व अपने स्थानमें (मेष-वृश्चिक) राशिमें हो व शुभग्रहसे युक्त हो अथवा पाप ग्रहके

घरमें हो व देखते हों तो स्त्रीका नाश हो। और चोरी तथा व्यभिचारके कारणसे अन्य दुष्ट स्त्रीसे भोग करनेवाला होता है। भगको चुम्बन करनेवाला हो, एवं चतुष्पद (चार पैर) वाले जीवोंसे मैथुन करनेवाला तथा मद्य पान करनेमें आसक्त होता है। मंगलके साथ शनि बैठा हो व देखता हो तो लिंगको चुम्बन करनेवाला यदि केतु युक्त होता रजस्वला स्त्रीसे भोग करनेवाला होता है। मंगलके साथ शत्रु ग्रह युक्त हो तो बहुत स्त्री नाश होती हैं। और निर्बली घमण्डी हो अथवा शुभग्रह देखते हो तो उक्त अशुभ फल नहीं होताहै ॥ ५४–६५ ॥

लग्नादष्टमे भौमफलम्

नेत्ररोगी अर्धायुः पित्ररिष्टं मूत्रकृच्छ्ररोगः ॥६६॥ अल्पपुत्रवान् वातशूलादिरोगः दारसुखयुतः ॥ ६७ ॥ शुभयुते देहारोग्यम् दीर्घायु मनुष्यादिवृद्धिः ॥ ६८ ॥ पापक्षेत्रे पापयुते ईक्षणवशाद्वातक्षयादिरोगः मूत्रकृच्छ्राधिक्यं वा ॥ ६९ ॥ मध्यमायुः ॥ ७० ॥ भावाधिपबलयुते पूर्णायुः ॥ ७१ ॥

लग्नसे आठवेंभावमें मंगल हो तो नेत्रमें रोगवाला, आधी उमर वाला, व पिताको अरिष्ट हो तथा मूत्र मल आदि रोग वाला

होता है। और थोडे पुत्रवाला हो, वात शूलादि रोग वाला और स्त्रीके सुखसे युक्त होता है। मंगलके साथ शुभ ग्रह बैठे हों तो शरीर निरोग्य हो दीर्घायुवाला, और मनुष्योंकी वृद्धिवाला हो। यदि मंगल पाप ग्रहके घरमें हो व पापग्रहसे युक्त हो व देखता हो तो वात क्षय आदि रोग होते हैं, और मूत्र मलसे रोग अधिक होते हैं। मध्यायुवाला हो। अष्टम स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो तो पूर्णायुवाला होता है ॥ ६६–७१ ॥

लग्नान्नवमे भौमफलम्

पित्ररिष्टम् ॥७२॥ भाग्यहीनः ॥७३॥ उच्चस्वक्षेत्रे गुरुदारगः ॥ ७४ ॥

लग्नसे नवम स्थानमें मंगल हो तो पिताको अरिष्ट हो, । व भाग्यसे रहित हो। यदि मंगल उच्च (मकर) का हो तथा अपने स्थान (मेष वृश्चिक) का हो तो गुरुकी स्त्रीसे व्यभिचार करनेवाला होता है ॥ ७२–७४ ॥

लग्नाद्दशमे भौमफलम्

जनवल्लभः ॥७५॥ भावाधिपे बलयुते भ्राता दीर्घायुः ॥७६॥ विशेषभाग्यवान् ध्यानशीलवान् गुरुभक्ति

युतः ॥७७॥ पापयुते कर्मविघ्नवान् ॥७८॥ शुभयुते-शुभक्षेत्रे कर्मसिद्धिः ॥७९॥ कीर्तिप्रतिष्ठावान् अष्टादशवर्षे द्रव्यार्जनसमर्थः ॥ ८० ॥ सर्वसमर्थः दृढगात्रः-चोरबुद्धिः पापयुते पापक्षेत्रे कर्मविघ्नकरः ॥ ८१ ॥ दुष्कृतिः ॥८२॥ भाग्येशकर्मेशयुते महाराजयौवराज्ये-पट्टाभिषेकवान् ॥८३॥ गुरुयुतेगजान्तैश्वर्यवान् ॥८४॥ भूसमृद्धिमान् ॥ ८५ ॥

लग्नसे दशवेंघरमें मङ्गल हो तो मनुष्यका प्रेमी हो। दशमस्थानका स्वामी बली ग्रहोंसे युक्त हो तो भाई दीर्घायु हो और वडा भाग्यवाला, परमात्मामें ध्यान करनेवाला, तथा गुरुकी सेवा करनेवाला होता है। यदि पाप ग्रह युक्त हो तो कार्यमें विघ्न करनेवाला हो। यदि मङ्गल शुभग्रहसे युक्त हो, व शुभग्रहके घरमें हो तो कार्यको सिद्ध करनेवाला होता है। कीर्ति व प्रतिष्ठावाला, १८ वर्षमें धन संग्रह करनेमें समर्थ हो। सर्वकार्योंमें, समर्थ, पुष्टशरीरवाला, चोरबुद्धिवाला हो, यदि पापग्रहसे युक्त हो व पापग्रहके घरमें हो तो कार्यमें विघ्न करनेवाला होता है। दुष्टकर्म करनेवाला हो। मङ्गल नवम दशम स्थानके स्वामीसे युक्त हो तो राजा और युवराजपदवीमें अभिषिक्त होता है। मङ्गलके साथ गुरु

बैठा हो तो हाथीकी सवारी वाला। और भूमिसे समृद्ध होकर बडा भाग्यशाली होता है ॥ ७५–८५ ॥

लग्नादेकादशे भौमफलम्

बहुकृत्यवान् धनी स्वगुणैराशुलाभवान् ॥ ८६ ॥ क्षेत्रेशयुते राजाधिपत्यवान् ॥८७॥ शुभद्वययुते महाराजाधिपत्ययोगः ॥ ८८ ॥ भ्रातृवित्तवान् ॥ ८९ ॥

लग्नसे ग्यारहवेंभवनमें मंगल हो तो बहुत कार्योंको करनेवाला, धनाढ्य, और अपने गुणोंसे शीघ्र लाभवाला होता है। मंगल एकादशस्थानके स्वामीसे युक्त हो तो राज्यका मालिक हो। दो शुभग्रह बैठे हों तो महाराज्यका स्वामी हो। और भाई धनवाला होता है ॥ ८६–८९ ॥

लग्नाद्द्वादशे भौमफलम्

द्रव्याभावः वातपित्तदेहः ॥ ९० ॥ पापयुते दाम्भिकः ॥ ९१ ॥

लग्नसे वारहवेंभावमें मङ्गल हो तो धनसे हीन हो, और वातपित्त रोगवाला शरीर होता है। यदि मङ्गलके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो पाखण्ड करनेवाला होता है ॥ ९०–९० ॥

इति श्रीभृगुसूत्रे सिद्धप्रभाकरीटीकाभियुक्ते भौमभावाध्यायोनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितबुधफलमाह

तत्रादौ लग्ने बुधफलम्

विद्यावान् विवाहादिबहुश्रुतवान् ॥ १ ॥ अनेकदेशे सार्वभौमः मन्त्रवादी पिशाचोच्चाटन समर्थः मृदुभाषी विद्वान् क्षमी दयावान् ॥ २ ॥ सप्तविंशतिवर्षे तीर्थयात्रायोगः बहुलाभवान् बहुविद्यावान् ॥ ३ ॥ पापयुते पापक्षेत्रे देहे रोगः पित्तपांडुरोगः ॥ ४ ॥ शुभयुते शुभक्षेत्रे देहारोग्यम् ॥ ५ ॥ स्वर्णकान्तिदेहः ज्योतिःशास्त्र पठितः अङ्गहीनः सज्जनद्वेषी नेत्ररोगी ॥ ६ ॥ सप्तदशवर्षे भ्रातॄणामन्योन्यकलहः ॥ ७ ॥ वंचकः ॥ ८ ॥ उच्चस्वक्षेत्रे भ्रातृसौख्यम् ॥ ९ ॥ श्रेष्ठ लोकं गमिष्यति ॥ १० ॥ पापयुते पापदृष्टयुते नीचर्क्षे पापलोकं गमिष्यति ॥ ११ ॥ शय्यासुख वर्जितःक्षुद्रदेवतोपासकः ॥ १२ ॥ पापमन्दादि युते वामनेत्रे हानिः षष्ठेशयुते नीचेशयुते वा न दोषः १३ ॥ अपात्रव्ययवान् ॥ १४ ॥ पापहा ॥ १५ ॥ शुभयुते

निश्चयेन धनधान्यादिमान् धार्मिकबुद्धिः ॥ १६ ॥
अस्त्रवित् गणितशास्त्रज्ञः सौख्यवान् तर्कशास्त्रवित् दृढ गात्रः ॥ १७ ॥

जन्म लग्नमें बुध हो तो विद्यावाला, विवाह करनेवाला हो, और बहुत शास्त्रोंको सुननेवाला हो। बहुत देशोंमें घूमनेवाला व यंत्र मन्त्रको जाननेवाला, भूत प्रेतको दूर करनेमें समर्थ मनोहर वाणी बोलनेवाला, पण्डित, क्षमाकरनेवाला और दयालु होता है। २७ वर्षमें तीर्थयात्रा हो और अत्यन्त लाभ हो तथा नानाप्रकारकी विद्या जाननेवाला होता है। बुधके साथ पापग्रह बैठे हों व पापग्रहके घरमें हो तो शरीरमें रोगवाला तथा पित्त पाण्डु, रोगवाला होता है। यदि शुभग्रह युक्त हो व शुभग्रहके घरमें हो तो शरीर निरोग्य होता है। और सुवर्णकी कान्तिके समान सुन्दर शरीरवाला ज्योतिष शास्त्रको पढनेवाला, अंगसे हीन श्रेष्ठ मनुष्योंसे कपट करनेवाला और नेत्रमें रोगवाला होता है। १७ वर्षमें भाइयोंका आपसमें लडाई झगडा हो। और ठगी होता है। बुधयदि उच्च (कन्या) का हो व अपने स्थान (मिथुन कन्या) में हो तो भाइयोंका सुख हो। और स्वर्गलोक जानेवाला होता है। यदि बुधके साथ पापग्रह बैठे हों व देखते हों तो अथवा नीच राशि मीन) में हो तो नरकलोक जानेवाला होताहै। और पलङ्गआदि

सुखसे रहितक्षुद्रदेवताकी पूजाकरनेवाला होताहै। बुधके साथ (शनि आदि पाप ग्रह बैठे हों तो बांये नेत्रमें हानि हो. और षष्ठम स्थानका स्वामी युक्त हो व बृहस्पति युक्त हो तो यह उक्त फल नहीं होता है। दुष्ट जगह खर्च करनेवाला और पापको नाश करनेवाला हो यदि बुध शुभ ग्रहसे युक्त हो तो निश्चय ही धन धान्यवाला हो तथा धर्मकरनेवाली बुद्धि हो। शस्त्रविद्या व गणित-शास्त्रको जाननेवाला सुखी एवंतर्कशास्त्रोंको भी जाननेवाला, और मजबूत शरीरवाला होता है ॥ १–१७ ॥

लग्नाद्द्वितीये बुधफलम्

पुत्रसमृद्धिः वाचालकः वेदशास्त्रविचक्षणः संकल्पसिद्ध्या संयुतः धनी गुणाढ्यः सद्गुणी पञ्चदशवर्षे बहुविद्यावान् ॥१८॥ बहुलाभप्रदः ॥ १९ ॥ पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे विद्याहीनः ॥२०॥ क्रूरत्ववान् पवनव्याधिः ॥ २१ ॥ शुभयुतिवीक्षणाद्धनी ॥२२॥ विद्यावान् ॥२३॥ गुरुणा युते वीक्षिते वा गणितशास्त्राधिकारेण सम्पन्नः ॥ २४ ॥

लग्नसे द्वितीय स्थानमें बुध हो तो पुत्रकी वृद्धिवाला बहुत बोलनेवाला वेद शास्त्रको जाननेवाला संकल्पकर कार्यको सिद्धकरने-

वाला एवं धनी अच्छे २ गुणोंवाला और १५ वर्षमें नानाप्रकारकी विद्या प्राप्त करनेवाला होता है । और विद्याके प्रतापसे अत्यन्त लाभ हो । बुधके साथ पाप ग्रह युक्त हो व पापग्रहके घरमें हो अथवा शत्रु तथा नीच (मीन) में हो तो विद्यासे रहित होता है । और दुष्ट स्वभाववाला वायुके द्वारा रोगवाला होता है । यदि बुधके साथ शुभ ग्रह बैठे हों व देखते हों तो धनाढ्य हो व विद्यावाला हो । बुधके साथ बृहस्पति बैठा हो व देखता हो तो गणितशास्त्रके अधिकारमें निपुण होता है॥१८–२४

लग्नतृतीये बुधफलम्

भ्रातृमान् बहुसौख्यवान् ॥ २५ ॥ पञ्चदशवर्षे-क्षेत्रपुत्रयुतः॥२६॥ धनलाभवान् ॥२७॥ सद्गुणशाली ॥२८॥ भावाधिपे बलयुते दीर्घायुः धैर्यवान् ॥२९॥ भवाधिपे भ्रातृपीडा भीतिमान् ॥३०॥ बलयुते भ्राता दीर्घायुः ॥ ३१ ॥

लग्नसे तीसरे घरमें बुध हो तो भाईवाला और अत्यन्त सुखवाला होता है । १५ वर्षमें स्थान व पुत्रसे युक्त हो । धनका लाभवाला होता है । और अच्छे २ गुणोंवाला होता है । यदि तृतीय स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हों तो गम्भीर और दीर्घायुवाला होता है । तृतीयस्थानका स्वामी निर्बल हो तो भाइयोंको

पीडा हो, और डरपोक होता है, बलीग्रहोंसे युक्त हो तो भाई दीर्घायु होता है ॥ २५ ॥ ३१ ॥

लग्नाच्चतुर्थे बुधफलम्

हस्तचापल्यवान् धैर्यवान् विशालाक्षः पितृमातृसौख्ययुतः ॥३२॥ ज्ञनवान् सुखी ॥३३॥ षोडशवर्षे द्रव्यापहाररूपेण अनेकवाहनवान् ॥३४॥ भावाधिपे बलयुते आन्दोलिकाप्राप्तिः ॥ ३५॥ राहुकेतुशनियुते वाहनारिष्टवान् ॥३६॥ क्षेत्रसुखवर्जितः बन्धुकुलद्वेषी कपटी ॥ ३७ ॥

लग्नसे चौथे भवनमें बुध हो तो हाथ बडे चञ्चल हो गम्भीर, विशाल नेत्रवाला, और माता पिताका सुखसे युक्त होता है। ज्ञानी और सुखी हो । १६ वर्षमें धनको चुरानेरूपसे बहुतसे वाहनवाला होता है । यदि बुधके साथ बृहस्पति शुक्र शनि ये बैठे हों तो अनेक वाहनवाला हो, चतुर्थ स्थानका स्वामी बली ग्रहोंसे युक्त हो तो पालकी प्राप्त होती है, बुधके साथ राहु केतु शनि बैठे हों तो वाहनोंका अरिष्टवाला अर्थात् नहीं प्राप्त होते हैं, और स्थान तथा सुखसे हीन भाई व कुलसे द्वेष करनेवाला और कपटी होता है ॥ ३२–३७ ॥

लग्नात्पञ्चमे बुधफलम्

मातुलगण्डः मात्रादिसौख्यं पुत्रविघ्नंमेधावी मधुरभाषी बुद्धिमान् ॥ ३८ ॥ भावाधिपे पापयुते बलहीने पुत्र-नाशः ॥ ३९ ॥ अपुत्रदत्तपुत्रप्राप्तिः पापकर्मी मन्त्रवादी ॥ ४० ॥

लग्नसे पञ्चम स्थानमें बुध हो तो मामाको गण्डवाला रोग हो, माताका सुखवाला, पुत्रसुखमें विघ्नवाला, बुद्धिमान् मनोहर वाणी बोलनेवाला होता है। पञ्चम स्थानका स्वामी पाप ग्रहोंसे युक्त हो व निर्बली हो तो पुत्रका नाश हो। पुत्र से रहित होकर दत्तकपुत्र प्राप्त हो पाप कर्म करनेवाला एवं मन्त्रोंको जाननेवाला होता है ॥ ३८--४० ॥

लग्नात्षष्ठे बुधफलम्

राजपूज्यः विद्याविघ्नः दाम्भिकः विवादशूरः ॥४१॥ त्रिंशद्वर्षे बहुराजस्नेहो भवति ॥ ४२ ॥ पत्रादिलेखकः ॥ ४३ ॥ कुजर्क्षे नीलकुष्ठादिरोगी ॥ ४४ ॥ शनि राहुयुते केतुयुते वातशूलादिरोगी ज्ञातिशत्रुकलहः ॥ ४५ ॥ भावाधिपे बलयुते ज्ञातिप्रबलः ॥ ४६ ॥ अरिनीचर्क्षे ज्ञातिक्षयः ॥ ४७ ॥

लग्नसे छठवें घरमें बुध हो तो राजाका पूज्य हो, विद्या पढनेमें विघ्न, धूर्त, और कलह करनेमें शूर वीर होता है । ३० वर्षमें अत्यन्त राजासे प्रेम होता है । और पत्रादि लिखनेमें चतुर होता है । बुध यदि मंगलकी राशिमें (मेष वृश्चिक) में हो तो नीलकुष्ठरोगवाला हो । बुधके साथ शनि राहु केतु युक्त हों तो वातशूलादि रोगवाला और जातिके शत्रुसे लड़ने झगडनेवाला होता है । यदि षष्ठमस्थानका स्वामी बली ग्रहोंसे युक्त हो तो जातिमें बली होता है । बुध शत्रुके घरमें हो व नीच (मीन) राशिमें हो तो जातिनाश होती है ॥ ४१--४७ ॥

लग्नात्सप्तमे बुधफलम्

मातृसौख्यम् अश्वाद्यारूढो धर्मज्ञः उदारमतिः ॥ ४८ ॥ दिगन्तविश्रुतकीर्तिः राजपूज्यः ॥ ४९ ॥ तत्र शुभयुते चतुर्विंशतिवर्षे आन्दोलिकाप्राप्तिः ॥५०॥ कलत्रमतिः ॥ ५१ ॥ अभक्ष्यभक्षणः ॥ ५२ ॥ भावेशे बलयुते एकदारवान् ॥ ५३ ॥ दारेशे दुर्बले पापे पापर्क्षे कुजादियुते कलत्र-नाशः ॥ ५४ ॥ स्त्रीजातके पतिनाशः कलत्रं कुष्ठ-रोगी ॥ ५५ ॥ अरूपवत् ॥५६॥

लग्नसे सातवेंभवनमें बुध हो तो माताका सुखवाला, घोडापर चढ-नेवाला, व धर्मको जाननेवाला और निर्मल एवं उदार बुद्धिवाला होता है। प्रत्येकदिशामें श्रवण कीर्तिवाला तथा राजाका पूज्य होता है। बुधके साथ शुभ ग्रह बैठे हों तो २४ वर्षमें पालकी प्राप्त हो। और स्त्रीके अनुकूल बुद्धिवाला होता है व नहीं भक्षण करने योग्य वस्तुको खानेवाला होता है। सप्तमस्थानका स्वामी बलीग्रहोंसे युक्त हो तो एक ही स्त्रीवाला हो। यदि सप्तम स्थानका मालिक निर्बल हो व पाप ग्रहसे युक्त हो अथवा पापग्रहकी राशिमें मंगलसे युक्त होकर बैठा हो तो स्त्रीका नाश होता है। यदि स्त्रीकी कुण्डलीमें ऐसा योग हो तो पतिका नाश हो और स्त्री कुष्ठरोग-वाली तथा कुरुपवती होती है ॥ ४५–४५ ॥

लग्नादष्टमे बुधफलम्

आयुःकारकः बहुक्षेत्रवान् ॥ ५७ ॥ सप्तपुत्रवान् ॥ ५८ ॥ पञ्चविंशतिवर्षे अनेकप्रतिष्ठासिद्धिः ॥५९॥ कीर्तिप्रसिद्धः ॥ ६० ॥ भावाधिपे बलयुते पूर्णायुः ॥ ६१ ॥ अरिनीचपापयुते अल्पायुः ॥ ६२ ॥ अथवा उच्चस्वक्षेत्रे वा शुभयुते पूर्णायुः ॥ ६३ ॥

लग्नसे आठवें भवनमें बुध हो तो आयुकोप्राप्त करनेवाला और बहुत स्थानोंवाला होता है। सात पुत्रवाला, तथा २५ वर्षमें

नाना प्रकारकी प्रतिष्ठासे प्रसिद्ध हो। और यशसेभी विख्यात होता है। अष्टमस्थानका स्वामी बलीग्रहोंसे युक्त हो तो पूर्णायु हो। यदि अष्टम स्थानका स्वामी शत्रुके घरमें व नीच (मीन) में हो अथवा पापग्रह युक्त हो तो अल्पायु हो। व उच्च राशि (कन्या) में हो एवं अपने स्थान (कन्या मिथुन) में हो अथवा शुभ ग्रहोंसे युक्त हो तो पूर्णायुवाला होता है ॥ ५७–६३ ॥

लग्नान्नवमे बुधफलम्

बहुप्रजासिद्धिः ॥ ६४ ॥ वेदशास्त्रविशारदः संगीत पाठकः दाक्षिण्यवान् धार्मिकः प्रतापवान् बहुलाभवान् पितृदीर्घायुः ॥ ६५ ॥ तपोध्यान-शीलवान् ॥ ६६ ॥

लग्नसे नवम स्थानमें बुध हो तो बहुत सन्तानवाला हो। और वेद शास्त्रको जाननेमें निपुण व गायन विद्याको पढनेवाला, बड़ा चतुर धर्म करनेवाला, तेजस्वी अत्यन्त लाभवाला और पिता दीर्घायुवाला होताहै। श्रीपरमात्माके चरणोंमें भक्ति ध्यान तथा भजन करनेकी प्रकृतिवाला होता है ॥ ६४–६६ ॥

लग्नाद्दशमे बुधफलम्

सत्कर्मसिद्धिः धैर्यवान् बहुलकीर्तिमान् बहुचित्त वान् ॥ ६७ ॥ अष्टाविंशतिवर्षे नेत्ररोगवान् ॥६८॥

उच्चस्वक्षेत्रे गुरुयुतेऽग्निष्टोमादिबहुकर्मवान्॥६९॥अरि पापयुते मूढकर्मविघ्नवान् दुष्कृतिः अनाचारः॥७०॥

लग्नसे दशवेंघरमें बुध हो तो पवित्र कार्यको सिद्ध करनेवाला, गम्भीर, अतुल कीर्तिवाला और बहुत प्रकारके चित्तवाला होता है । २८ वर्षमें नेत्रमें रोगवाला होता है । बुध उच्च (कन्या) में हो व अपने स्थान (मिथुनकन्या) में हो अथवा बृहस्पतिसेयुक्त हो तो अग्निष्टोम यज्ञादि पवित्र कर्म करनेवाला होता है । यदि बुध शत्रुके घरमें व पाप ग्रहके साथ युक्त हो तो मूर्ख कर्मको नाश करनेवाला व नीच पाप कर्म करनेवाला और भ्रष्ट आचरणवाला होता है ॥ ६७–७० ॥

लग्नादेकादशे बुधफलम्

बहुमङ्गलप्रदः ॥ ७१ ॥ अनेकप्रकारेण धनवान् ॥७२॥ एकोनविंशतिवर्षादुपरि क्षेत्रपुत्रधनवान् दयावान् ॥७३॥ पापर्क्षे पापयुते हीनमूलेन धनलोपः ॥ ७४ ॥ उच्चस्वक्षेत्रे शुभमूलेन धनवान् ॥ ५७ ॥

लग्नसे ग्यारहवेंभवनमें बुध होतो बहुतसे मंगल कार्य प्राप्त होते है । और नाना प्रकारसे धनवाला होता है । १९ वर्षके बाद स्थान पुत्र व धनसे युक्त हो और बड़ादयालु होता है । बुध पाप

ग्रहके घरमें हो व पाप ग्रहसे युक्त हो तो नीचकर्मके द्वारा धनका नाश हो. यदि बुध उच्च राशि (कन्या) में हो अपने स्थान (मिथुन कन्या) में हो तो शुभकार्यसे धनका लाभ होताहै ॥ ७१–७५ ॥

लग्नाद्द्वादशे बुधफलम्

ज्ञानवान् ॥७६॥ वितरणशाली ॥७७॥ पापयुते चञ्चलचित्तः ॥७८॥ नृपजनद्वेषी ॥७९॥ शुभयुतेन धर्ममूलेन धनव्ययः ॥ ८० ॥ विद्याहीनः ॥ ८१ ॥

लग्नसे बारहवें भावमें बुध होतो ज्ञानी हो। और कोई वस्तु देनेमें चतुर हो । बुधके साथ पाप ग्रह युक्त हो तो चञ्चल चित-वाला होता है । और राजा तथा मनुष्योंसे वैर करने वाला हो, शुभग्रह बैठे हो तो धर्मके कारणसे धनका खर्च होता है । और विद्यासे रहित होता है ॥ ७६ ॥ ८१ ॥

इति श्रीभृगुसूत्रे सिद्धप्रभाकरीटीकाभियुक्ते बुधभावाध्यायनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितगुरुफलमाह

तत्रादौ लग्ने गुरुफलम्

स्वक्षेत्रे शब्दशास्त्राधिकारी ॥ १ ॥ त्रिवेदी बहुपुत्रवान् सुखी चिरायुः ज्ञानवान् ॥२॥ उच्चे पूर्णफ-

लानि ॥३॥ षोडशवर्षे महाराजयोगः॥४॥ अरिनीच-पापानां क्षेत्रे पापयुते वा नीचकर्मवान् ॥५॥ मनश्चल-त्ववान् मध्यायुः पुत्रहीनः स्वजनपरित्यागी कृतघ्नः गर्विष्ठः बहुजनद्वेषी साश्चरवान् पापक्लेशभोगी॥ ६ ॥

जन्मलग्नमें गुरु हो और अपने स्थान (धन मीन) में हों तो व्याकरण शास्त्रको जाननेवाला हो। और तीनवेदों का ज्ञाता बहुत पुत्रोंवाला, सुखी वडी आयुवाला और ज्ञानी होता है। बृहस्पति यदि उच्च (कर्क) का हो तो ये पूर्ण फल प्राप्त होते हैं। १६ वर्षमें महा राजयोगवाला हो। गुरु शत्रुके व नीच राशि (मकर) में हो तथा पापग्रहके घरमें व पाप ग्रहसे युक्त हो तो नीच कर्म करनेवाला होता है। और चञ्चल चित्तवाला हो मध्यायुवाला पुत्रसे रहित अपने कुटुम्बियोंको छोड़नेवाला किये हुये उपकारको नहीं माननेवाला कृतघ्न घमण्डी, बहुत मनुष्यों से वैर करनेवाला, पापी और दुःख भोगनेवाला होता है ॥ १–६ ॥

लग्नाद्द्वितीये गुरुफलम्

धनवान् बुद्धिमान् इष्टभाषी षोडशवर्षे धनधान्यसमृद्धिः बहुप्राबल्यवान् उच्चस्वक्षेत्रे धनुषि द्रव्यवान् ॥ ७ ॥

पापयुते विद्याविघ्नः ॥८॥ चोरवञ्चनवान् दुर्वचनः अनृतप्रियः ॥ ९ ॥ नीचक्षेत्रे पापयुते मद्यपानी भ्रष्टः ॥ १० ॥ कुलनाशकः ॥ ११ ॥ कलत्रान्तरयुक्तः पुत्रहीनः ॥ १२ ॥

लग्नसे दूसरे स्थानमें गुरु हो तो धनी, बुद्धिमान् मनोहर वाणी बोलनेवाला हो, १६ वर्षमें धन धान्यकी बहुत वृद्धि हो, और अधिक प्रतापवाला होता है यदि गुरु उच्च (कर्क) का व अपने स्थान (धन मीन) राशि का हो तो महाधनी हो यदि पापग्रह युक्त हो तो विद्या पढनेमें विघ्न हो । और चोरी करनेवाला व ठगनेवाला, खराव वचन बोलनेवाला होता है तथा झूठ बोलनेवाला हो यदि बृहस्पति नीच (मकर) राशिसे हो और पापग्रह युक्त हो तो मद्यपान करनेवाला तथा भ्रष्ट होता है । कुटुम्बका नाश करनेवाला दूसरेकी स्त्रीसे युक्त हो तथा पुत्रसे रहित होता है ॥ ७–१२ ॥

लग्नात्तृतीये गुरुफलम्

अतिलुब्धः भ्रातृवृद्धिः दाक्षिण्यवान् संकल्पसिद्धिकरः ॥ १३ ॥ बन्धुदोषकरः ॥ १४ ॥ अष्टत्रिंद्वर्षे यात्रासिद्धिः ॥ १५ ॥ भावाधिपे बलयुते

भ्रातृदीर्घायुः ॥ १६ ॥ भावाधिपे पापयुते भ्रातृनाशः ॥ १७ ॥ धैर्यहीनः जडबुद्धिः दरिद्रः ॥ १८ ॥

लग्नसे तीसरे भवनमें गुरु होतो अत्यन्त लोभी भाइयोंकी वृद्धि-वाला,बडा चतुर, कोई कार्य संकल्पकर सिद्ध करनैवाला होता है। तृतीय स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो तो भाइयोंकी दीर्घायु हो यदि पापग्रहके साथ युक्त होवे तो भाइयोंका नाश होता है एवं सन्तोषसें रहित, जडबुद्धिवाला और दरिद्री होता है॥२४-३१॥

लग्नाच्चतुर्थे गुरुफलम्

सुखी क्षेत्रवान् बुद्धिमान् क्षीरसमृद्धः सन्मनाः मेधावी ॥ १९ ॥ भावाधिपे बलयुते भृगुचन्द्रयुक्ते शुभवर्गेण नरवाहनयोगः ॥२०॥ बहुक्षेत्रः अश्ववाहनयोगः गृहविस्तरवान् ॥ २१ ॥ पापयुः पापिनः दृष्टिवशात् क्षेत्रवाहनहीनः ॥ २२ ॥ परगृहवासः क्षेत्रहीनः मातृनाशः बन्धुद्वेषी ॥ २३ ॥

लग्नसे चौथे घरमें गुरु हो तो सुखी, स्थानवाला बुद्धिमान् हमेशा दूधकी वृद्धिवाला और शुद्ध चित्तवाला तथा पवित्र बुद्धि-वाला होता है। चतुर्थ स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसें युक्त हो व शुक्र चन्द्रमा युक्त हो अथवा शुभग्रहके वर्गमें हो तो मनुष्यकी

सवारी करनेवाला होता है। और बहुत स्थानवाला, घोड़ाकी सवारी वाला तथा बडा घरवाला होता है। चतुर्थ स्थानके स्वामीके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो पापी हो अथवा देखते हो तो घर तथा वाहनसे रहित हो। और दूसरेके घरमें रहनेवाला माताका नाश करनेवाला और भाइयोंसे कपट करनेवाला होता है ॥ १९–२३ ॥

लग्नात्पञ्चमे गुरुफलम्

बुद्धिचातुर्यवान् विशालेक्षणःवाग्मी प्रतापी अन्नदान प्रियः कुलप्रियः अष्टादशवर्षे राजद्वारेण सेनाधिपत्य योगः ॥ २४ ॥ पुत्रसमृद्धिः २५ ॥ भावाधिपे बल युते पापक्षेत्रे अरिनीचगे पुत्रनाशः ॥२६॥ एकपुत्र वान् ॥ २७ ॥ धनवान् ॥ २८ ॥ राजद्वारे राजमू लेन धनव्ययः ॥ २९ ॥ राहुकेतु-युते सर्पशापात् सुत क्षयः ॥ ३० ॥ शुभदृष्ट परिहारः ॥ ३१ ॥

लग्नसे पांचवेंभावमें गुरु हो तो चतुर बुद्धिवाला तथा दीर्घने-त्रवाला, वाणीबोलनेवाला तेजस्वी व (वाचाल) अन्नका दान देनेमें प्रेमी और कुटुम्बका प्रिय होता है। १८ वर्षमें राजके द्वारमें सेनाका स्वामी हो। और पुत्रकी सम्वृद्धिवाला होताहै। यदि

पञ्चम स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो व पापग्रहके घरमें हो अथवा शत्रु तथा नीच (मकर) राशिमें हो तो पुत्रका नाश हो अथवा सिर्फ एकही पुत्रवाला, और धनाढ्य होता है। राज्यसम्बन्धिकारणसे कचहरीमें धनका खर्च हो। पञ्चमस्थानके स्वामीके साथ या गुरुके साथ राहु केतु बैठे हों तो सर्पके शापसे पुत्रका नाश हो। शुभ ग्रहकी दृष्टि हो तो यह दोष दूर हो जाता है, अर्थात् पुत्रका सुख होता है ॥२४–३१ ॥

लग्नात्षष्ठे गुरुफलम्

शत्रुक्षयः ज्ञातिवृद्धिः पौत्रादिदर्शनं व्रणशरीरः शुभयुते रोगाभावः ॥ ३२ ॥ पापयुते पापक्षेत्रे वातशैत्यादिरोगः ॥ ३३ ॥ मन्दक्षेत्रे राहुयुते महारोगः ॥३४॥

लग्नसे छठवें स्थानमें बृहस्पति हो तो शत्रुका नाश हो और जातिकी वृद्धिवाला पुत्रकापुत्र (पोता) को देखनेवाला, तथा शरीरमें चिह्नवाला होता है। गुरुके साथ शुभ ग्रह बैठे हों तो रोगसे हीन हो। पापग्रह युक्त हो व पापग्रहके घरमें हो तो वात व शीतरोगवाला हो बृहस्पति शनिके स्थान (मकर कुंभ) में राहुके साथ बैठा हो तो भयङ्कर रोगवाला होता है ॥ ३२–३४ ॥

लग्नात्सप्तमे गुरुफलम्

विद्याधनेशः बहुलाभप्रदः चिन्ताधिकः विद्यावान्

पातिव्रत्यभक्तियुतकलत्रः ॥ ३५ ॥ भावाधिपे बल हीने राहुकेतुशनिकुजयुते पापवीक्षणाद्वा कलत्रान्तरम् ॥ ३६ ॥ शुभयुते उच्चस्वक्षेत्रे एकदारवान् कलत्रद्वारा बहुवित्तवान् सुखी चतुस्त्रिंशद्वर्षे प्रतिष्ठासिद्धिः ॥३७॥

लग्नसे सातवें भावमें बृहस्पति हो तो विद्या और धनका मालिक हो, और ये अत्यन्त लाभको देनेवाले होते हैं, बहुत चिन्तावाला विद्यावाला हो और स्त्री पवित्रता भक्तिसे युक्ति हो। सप्तम स्थानका स्वामी निर्बल हो अथवा राहु, केतु, शनि मंगल ये ग्रह बैठे हों व पाप ग्रह देखते हों तो अन्य स्त्रीके भोग करने वाला हो। यदि सप्तमस्थानके स्वामीके साथ शुभ ग्रह युक्त हो व उच्चमें (कर्क) राशिमें अथवा अपने स्थान (धन-मीन) में हो तो एकही स्त्रीवाला हो, और स्त्रीके द्वारा बहुत धनी हो, तथा सुखी हो, और ३४ वर्षमें प्रतिष्ठावाला होता है ॥३५–३७॥

लग्नादष्टमे गुरुफलम्

अल्पायुः नीचकृत्यकारी ॥३८॥ पापयुते पतितः ॥ ३९ ॥ भावाधिपे शुभयुते रन्ध्रे दीर्घायुः ॥ ४० ॥ बलहीने अल्पायुः ॥ ४१ ॥ पापयुते सप्तदशवर्षादुपरि विधवासङ्गमो भवति ॥ ४२ ॥ उच्चस्वक्षेत्रे दीर्घायुः

बलहीनः अरोगी योगपौरुषः विद्वान् वेदशास्त्रवि-
चक्षणः ॥ ४३ ॥

लग्नसे आठवें भवनमें गुरु हो तो अल्पायुवाला और नीच-कर्म करनेवाला होता है। बृहस्पतिके साथ पापग्रह युक्त हो तो भ्रष्ट होता है। अष्टम स्थानका स्वामी शुभ ग्रहसे युक्त होकर अष्टमस्थानमें हो तो दीर्घायुवाला हो । अष्टमस्थानका स्वामी बलहीन हो तो अल्पायु हो। पापग्रह बैठे हों तो १७ वर्षके बाद विधवा स्त्रीसे संगम होता है। यदि गुरु उच्च (कर्क) का हो अथवा अपने स्थान (धन मीन) में हो तो दीर्घायु हो निर्बल हो तो निरोग्य हो और उद्योग करनेवाला, पण्डित तथा वेद शास्त्रको जाननेवाला होता है ॥ ३८ ॥ ४३ ॥

लग्नान्नवमे गुरुफलम्

धार्मिकः ॥ ४४ ॥ तपस्वी साधुतारूढः धनिक पञ्चत्रिंशद्यज्ञकर्ता पितृदीर्घायुः सत्कर्मसिद्धिः अनेक-प्रतिष्ठावान् बहुजनपालकः ॥ ४५ ॥

लग्नसे नौवें स्थानमें गुरु हो तो धर्मकर्म करनेवाला हो । तप करनेवाला, पवित्रतासे युक्त और धनवान् होता है, ३५ वर्षमें यज्ञकरनेवाला हो, दीर्घायु पिता हो. शुभ पवित्र कर्म कर-

नेसे नाना प्रकारकी प्रतिष्ठावाला, और वहुत मनुष्योंको रक्षा करनेवाला होता है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥

लग्नाद्दशमे गुरुफलम्

धार्मिकः शुभकर्मकारी गीतापाठकः योग्यतावान् प्रौढकीर्त्तिः बहुजनपूज्यः ॥ ४६ ॥ भावाधिपे बलयुते विशेषक्रतुसिद्धिः ॥ ४७ ॥ पापयुते पापक्षेत्रे कर्मविघ्नः ॥ ४८ ॥ दुष्कृतियात्रालाभहीनः ॥ ४९ ॥

लग्नसे दशवें घरमें गुरु हो तो धर्मात्मा शुभ कर्म करनेवाला गीताका पाठ करनेवाला, चतुर उज्ज्वलयशवाला, और बहुत मनुष्योंका पूजनीय होता है। दशम स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो तो यज्ञ करनेवाला हो, पापग्रह युक्त हो व पाप ग्रहके घरमें हो तो कार्यमें विघ्न करनेवाला हो, दुष्टकर्म करनेवाला हो, और यात्रामें लाभसे हीन होता है ॥ ४६ ॥ ४९ ॥

लग्नादेकादशे गुरुफलम्

विद्वान् धनवान् बहुलाभवान् द्वात्रिंशद्वर्षे अश्वारूढः ॥ ५० ॥ अनेकप्रतिष्ठासिद्धिः ॥ ५१ ॥ शुभपापयुते गजलाभः ॥ ५२ ॥ भाग्यवृद्धिः चन्द्रयुते निक्षेपलाभः ॥ ५३ ॥

लग्नसे एकादशभावमें बृहस्पति हो तो पण्डित धनाढ्य तथा अत्यन्त लाभवाला हो, ३२ वर्षमें घोड़ापर चढनेवाला होता है। और बडा प्रतिष्ठावाला हो, गुरुके साथ शुभ तथा पापग्रह बैठे हों तो हाथीपर चढनेवाला हो। भाग्यकी वृद्धिवाला हो, बृहस्पतिके साथ चन्द्रमा बैठा हो तो धरी हुई वस्तुका लाभ होता है ॥ ५० ॥ ५३ ॥

लग्नाद्द्वादशे गुरुफलम्

निर्धनः पठितः अल्पपुत्रः गणितशास्त्रज्ञः सम्भोगी ॥ ५४ ॥ ग्रन्थिव्रणी अयोग्यः ॥ ५५ ॥ शुभयुते उच्चस्वक्षेत्रे स्वर्गलोकप्राप्तिः ॥५६॥ पापयुते पापलोकप्राप्तिः ॥५७॥ धर्ममूलेन धनव्ययः ब्राह्मणस्त्रीसम्भोगी गर्भिणीसङ्गमी ॥ ५८ ॥

लग्नसे बारहवें स्थानमें गुरु हो तो धनसे हीन विद्या पढनेवाला थोडे पुत्रवाला व गणितशास्त्रको जाननेवाला, और नाना प्रकारके भोगको भोगनेवाला होता है। गांठवाला एवं घाववाला और योग्यतासे रहित हो। गुरुके साथ शुभग्रह युक्त हो व उच्च (मीन) में हो अथवा अपने स्थान (धन मीन) में हो तो स्वर्गलोक प्राप्त हो। पापग्रह बैठे हों तो नरक प्राप्त हो और धर्मके कारणसे

धनको खर्च करनेवाला, ब्राह्मणकी स्त्रीसे भोग करनेवाला, और गर्भवती स्त्रीसे व्यभिचार करनेवाला होता है ॥ ५४ ॥ ५८ ॥

इति श्रीभृगुसूत्रे सिद्धप्रभाकरीटीकाभियुते
गुरुभावाध्यायनामपञ्चमोऽध्याय ॥५॥

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितभृगुफलमाह ।
तत्रादौ लग्ने भृगुफलम् ।

गणितशास्त्रज्ञः ॥ १ ॥ दीर्घायुः दारप्रियः वस्त्रालंकारप्रियः रूपलावण्यप्रियः गुणवान् ॥ २ ॥ स्त्रीप्रियः धनी विद्वान् ॥ ३ ॥ शुभयुते अनेकभूषणवान् ॥ ४ ॥ स्वर्णकान्तिदेहः ॥ ५ ॥ पापवीक्षितयते नीचास्तगते चोरवञ्चनवान् ॥ ६ ॥ वातश्लेष्मादिरोगवान् ॥ ७ ॥ भावाधिपे राहुयुते ब्रूहद्विजो भवति ॥ ८ ॥ वाहने शुभयुते गजान्तैश्वर्यवान् ॥ ९ ॥ स्वक्षेत्रे महाराजयोगः ॥ १० ॥ रन्ध्रे अष्टव्ययाधिपे शुक्रे दुर्बले स्त्रीद्वयम् ॥ ११ ॥ चञ्चलभाग्यः ॥ १२ ॥ क्रूरबुद्धिः ॥ १३ ॥

जन्म लग्नमें शुक्र स्थित हो तो गणितशास्त्रको जाननेवाला, । दीर्घायुवाला स्त्रीसे प्रेम करनेवाला व वस्त्र आभूषणसे युक्त, सुन्दर स्वरूपवाला और अच्छे २ गुणोंवाला होता है। और स्त्रियोंका प्रिय धनवान् और पंडित होता है। शुक्रके साथ शुभ ग्रह युक्त हो तो अनेकों आभूषणवाला हो। सुवर्णके तुल्य सुन्दर शरीर-वाला होता है। यदि शुक्रको पाप ग्रह देखते हों व युक्त हो तथा नीचराशि (कन्या) में हो और अस्त होगया हो तो चोर और ठगी होता है। और वात श्लेष्म आदि रोगवाला हो। लग्नके स्वामीके साथ राहु बैठा हो तो बडा अण्डकोशवाला होता है। चतुर्थ स्थानमें शुभ ग्रहयुक्त हो तो हाथी और उत्कृष्ट प्रतापवाला हो। शुक्र अपने स्थानमें (वृष तुला) राशिमें हो तो बडा राजयोगवाला हो। शुक्र अष्टम द्वादश स्थानका स्वामी हो तथा बल हीन हो तो दो स्त्रीवाला होता है अच्चल भाग्यं वाला और नीचबुद्धि वाला होता है ॥ १--१३ ॥

लग्नाद्द्वितीये भृगुफलम्

धनवान् कुटुम्बी सुभोजनः विनयवान् ॥ १४ ॥ नेत्रे विलासधनवान् सुमुखः ॥ १५ ॥ दयावान् परोपकारी ॥ १६ ॥ द्वात्रिंशद्वर्षे उत्तमस्त्रीलाभः १७ ॥ भावाधिपे दुर्बले दुःस्थाने नेत्रवैपरीत्यं भवति ॥१८॥

शशियुते निशान्धः कुटुम्बहीनो नेत्ररोगी धननाशकरः ॥ १९ ॥

लग्नसे दूसरे स्थानमें शुक्र हो तो धनी, कुटुम्बी, अच्छा भोजन करनेवाला और नम्रतावाला होता है। सुन्दर नेत्रवाला धनी एवं अच्छा मुखवाला, दयालु दूसरोंकी भलाई करनेवाला होता है। ३२ वें वर्षमें सुन्दर स्त्री प्राप्त हो। द्वितीयस्थानका स्वामी बलहीन और दुष्ट स्थानमें स्थित हो तो नेत्रमें फूला अथवा रोग होता है। शुक्रके साथ चन्द्रमा बैठा हो तो रात्रिमें अन्धा कुटुम्बसें रहित, नेत्रमें रोगवाला और धनको नाशकरनेवाला होता है ॥ १४–१९ ॥

लग्नात्तृतीये भृगुफलम्

अतिलुब्धः दाक्षिण्यवान् भ्रातृवृद्धिः संकल्पसिद्धिः पश्चात्सहोदराभावः ॥ २० ॥ क्रमेण भ्रातृ तत्परः वित्तभोगपरः ॥ २१ ॥ भावाधिपे बलयुते उच्चस्वक्षेत्रे भ्रातृवृद्धिः दुःस्थाने पापयुते भ्रातृ नाशः ॥ २२ ॥

लग्नसे तीसरे भवनमें शुक्र हो तो अत्यन्त लोभी बडा चतुर भाईयोंकी वृद्धिवाला, मनमें कार्यको विचारकर सिद्ध करनेवाला

और पीछेसे भाइयोंसे हीन होता है। यथाक्रमसे जन्म हुवे भ्राताओंसे तत्पर एवं धनको भोगनेवाला हो। यदि तृतीय स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो व उच्च (मीन) का अथवा अपने स्थान (वृष तुला) का हो तो भाइयोंकी वृद्धिवाला हो और शुक्र दुष्ट स्थानमें व पापग्रहसे युक्त हो तो भाइयोंका नाश होता है ॥ २०–२२ ॥

लग्नाच्चतुर्थे भृगुफलम्

शोभनवान् बुद्धिमान् भ्रातृसौख्यं सुखी क्षमावान् ॥ २३ ॥ त्रिंशद्वर्षे अश्ववाहनप्राप्तिः ॥ २४ ॥ क्षीरसमृद्धिः भावाधिपे बलयुते अश्वान्दोलिकाकनकचतुरङ्गादिवृद्धिः ॥ २५ ॥ तत्र पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे बलहीने क्षेत्रवाहनहीनः ॥ २६ ॥ मातृक्लेशवान् ॥ २७ ॥ कलत्रान्तरभोगी ॥ २८ ॥

लग्नसे चोथेघरमें शुक्र हो तो सुन्दर रूपवाला, बुद्धिमान्, भाइयोंका सुखवाला, आनन्द करनेवाला, और शान्तिवाला होता है। ३० वर्षमें घोड़ेकी सवारी प्राप्त हो। हमेशा दूधकी वृद्धिवाला हो यदि चतुर्थ स्थानका स्वामी बली ग्रहोंसे युक्त हो तो घोडोंकी पालकी (बग्घी) पर सवारी करने वाला हो और

सुवर्ण चतुरंगादि बलकी वृद्धिवाला हो। शुक्रके साथ पाप ग्रह बैठे हों व पाप ग्रहके घरमें हो अथवा शत्रुके घरमें व नीच ((कन्या) में हो तथा बलहीन होनेपर स्थान और सवारीसे रहित होता है। माताके दुःखसे युक्त हो। अन्य स्त्रियोंसे भोग करनेवाला होता है ॥ २३–२८ ॥

लग्नात्पञ्चमे भृगुफलम्

बुद्धिमान् मन्त्री सेनापतिः ॥ २९ ॥ माता मट्टी दृष्वा यौवनदारपुत्रवान् ॥ ३० ॥ राजसन्मानी मन्त्री सुज्ञः स्त्रीप्रसन्नतावृद्धिः ॥ ३१ ॥ तत्र पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे बुद्धिजाड्ययुतः पुत्राशः ॥ ३२ ॥ तत्र शुभयुते बुद्धिमान् नीतिमत्पुत्रसिद्धिःवाहनयोगः॥ ३३॥

लग्नसे पांचवें भावमें शुक्र हो तो बुद्धिमान्, मन्त्री, और सेनाका मालिक होता है। दादीको देखनेवाला, युवा स्त्री और पुत्रवाला होता है। राज्यमें सत्कार पानेवाला 'मन्त्री चतुर प्रसन्न स्त्रीवाला होता है। शुक्रके साथ पापग्रह बैठे हों व पाप-ग्रहके घरमें हो शत्रु तथा नीच (कन्या) में हो तो जडबुद्धि-वाला, और पुत्रकी इच्छा करनेवाला हो। यदि शुभग्रह युक्त हो तो नीतिको जाननेवाला, पुत्रवाला, और वाहन प्राप्त होता है ॥ २९ ॥ ३३ ॥

लग्नात्षष्ठ भृगुफलम्

ज्ञातिप्रजासिद्धिः शत्रुक्षयः पुत्रपौत्रवान् ॥ ३४ ॥ अपात्रव्ययकारी मायावादी रोगवान् आर्यपुत्रवान् ॥ ३५ ॥ भावाधिपे बलयुते शत्रुज्ञातिर्द्धिः शत्रुपापयुते नीचस्थे भावेशेन्दुस्थे शत्रुज्ञातिनाशः ॥ ३६ ॥

लग्नसे छटवेंस्थानमें शुक्र हो तो जाति व सन्तानवाला शत्रुको नाश करनेवाला, पुत्र और पौत्र (पोता) वाला होता है। दुष्ट स्थानमें खर्च करनेवाला, कपटसे बोलनेवाला, तथा रोगवाला व श्रेष्ठ पुत्रवाला होता है। यदि षष्ठमस्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंमें युक्त हो तो शत्रु तथा जातिकी वृद्धिवाला हो और शत्रु तथा पाप ग्रहसे युक्त हो, व नीच (कन्या) में हो अथवा षष्ठमस्थानके स्वामीके साथ चन्द्रमा बैठा हो तो शत्रु तथा जातिका नाश होता है ॥ ३४ ॥ ३६ ॥

लग्नात्सप्तमे भृगुफलम्

अतिकामुकः मुखचुम्बकः ॥३७॥ अर्थवान् परदाररतः वाहनवान् सकलकार्यनिपुणः स्त्रीद्वेषी सत्प्रधानजनबन्धुकलत्रः ॥३८॥ पापयुते शत्रुक्षेत्रे अरिनीचगे कलत्रनाशः ॥ ३९ विवाहद्वयम् ॥ ४० ॥ बहुपाप

युते अनेककलत्रान्तरप्राप्तिः ॥ ४१ ॥ पुत्रहीनः ॥४२॥ शुभयुते उच्चे स्वक्षेत्रे तुले कलत्रदेशे बहुवित्तवान्॥ ४३ ॥ कलत्रमूलेन बहुप्राबल्ययोगः स्त्रीगोष्ठिः ॥ ४४ ॥

लग्नसे सातवेंभवनमें शुक्र हो तो बड़ा कामी हो, और मुखको चुम्बन करनेवाला होता है। धनवान् दूसरेकी स्त्रीसे भोग करनेवाला, सवारीवाला, तथा सम्पूर्ण कार्योंमें कुशल स्त्रीसे कपट करनेवाला और भाई, स्त्री, आदि कुटुम्बी मनुष्यवाला होता है शुक्रके साथ पाप ग्रह बैठे हों व शत्रुके घरमें अथवा शत्रु नीच (कन्या) में हो तो स्त्रीका नाश हो। और दो विवाह करनेवाला होता है। यदि शुक्रके साथ बहुतसे पाप ग्रह युक्त हों तो अनेकों स्त्री प्राप्त होती हैं और पुत्रसे हीन होता है। शुक्र शुभ ग्रहसे युक्त हो व उच्च (मीन) में हो अथवा अपने स्थान, (वृष तुला) में हो तो स्त्रीके देशमें बहुत धन प्राप्त हो। और स्त्रीके प्रतापसे अत्यन्त तेजस्वी हो तथा स्त्रियोंके समूहमें रहनेवाला होता है ॥ ३७ ॥ ४४ ॥

लग्नादष्टमे भृगुफलम्

सुखी चतुर्थे वर्षे मातृगण्डः ॥ ४५ ॥ अर्धायुः रोगी हितदारवान् असन्तुष्टः ॥४६॥ शुभक्षेत्रे पूर्णायुः ॥ ४७ ॥ तत्र पापयुते अल्पायुः ॥ ४८ ॥

लग्नसे आठवें घरमें शुक्र हो तो सुखवाला, और ४ वर्षमें माताको गण्डमाला हो। आधी आयुवाला, तथा रोगी होता है, हितैषी स्त्रीवाला, और सन्तोषसे रहित होता है। शुभाशुभ ग्रहोंके घरमें हो तो पूर्णायु होती है।साथ पाप ग्रह बैठे हों तो अल्पायु-वाला होता है ॥ ४५ ॥ ४८ ॥

लग्नान्नवमें भृगुफलम्.

धार्मिकः तपस्वी अनुष्ठानपरः ॥ ४९ ॥ पादेबहूत्त मलक्षणः धर्मी भोगवृद्धिः सुतदारवान् ॥ ५० ॥ पितृ दीर्घायुः ॥ ५१ ॥ तत्र पापयुते पित्ररिष्टवान् ॥५२॥ पापयुते पापक्षेत्रे अरिनीचगे धनहानिः ॥ ५३ ॥ गुरुदारगः ॥ ५४ ॥ शुभयुते भाग्यवृद्धिः ॥ ५५ ॥ महाराजयोगः ॥ ५६ ॥ वाहनकामेशयुते महाभाग्यवान् अश्वान्दोल्यादिवाहनवान्॥५७॥वस्त्रालंकारप्रियः ५८

लग्नसे नवम स्थानमें शुक्र हो तो पुण्य करनेवाला,तप करनेवाला और अनुष्ठान करनेवाला होता है। चरणोंमें बडा उत्तम चिह्न-वाला, धर्मवाला, भोगकी वृद्धिवाला, और पुत्र तथा स्त्रीवाला होता है। पिता दीर्घायु हो। शुक्रके साथ पापग्रह बैठे हों तो पिताको अरिष्ट हो। यदि शुक्र पापग्रहसे युक्त हो व पाप ग्रहके घरमें हो

अथवा शत्रु तथा नीचराशि (कन्या)में हो तो धनका नुकसान होता है। और गुरुकी स्त्रीसे व्यभिचार करनेवाला हो। शुभ ग्रहयुक्त हो तो भाग्यकी वृद्धिवाला हो, एवं राजयोग भी होता है। शुक्र चतुर्थ और सप्तम स्थानके स्वामीके साथ बैठा हो तो बडा भाग्यशाली हो और घोड़ोंकी सवारीवाला तथा पालकीपर चढनेवाला हो। वस्त्र तथा आभूषणसे युक्त होता है ॥४९–५८॥

लग्नाद्दशमे भृगुफलम्

बहुप्रतापवान् पापयुते कर्मविघ्नकरः गुरुबुधचन्द्रयुते अनेकवाहनारोहणवान् ॥ ५९ ॥ अनेकक्रतुसिद्धिः ॥ ६० ॥ दिगन्तविश्रुतकीर्तिः अनेक राजयोगः बहुभाग्यवान् वाचालः ॥ ६१ ॥

लग्नसे दशवें भवनमें शुक्र हो तो बड़ा तेजस्वी हो, शुक्रके साथ पाप ग्रह युक्त हो तो कार्यमें विघ्न करनेवाला हो यदि बृहस्पति बुध चन्द्रमा युक्त हो तो बहुत सी सवारियोंपर चढनेवाला होता है। और नानाप्रकारके यज्ञ करनेवाला हो। तथा सब दिशाओंमें यश सुननेवाला, अनेक राजयोगवाला एवं बड़ा भाग्यवान् और बहुत बोलनेवाला होता है ॥५९–६१॥

लग्नादेकादशे भृगुफलम्

विद्वान् बहुधनवान् भूमिलाभवान् दयावान् शुभ-

युते अनेकवाहनयोगः ॥ ६२ ॥ पापयुते पापमूलात् धनलाभः ॥ ६३ ॥ शुभयुते शुभमूलात् नीचर्क्षे पापे रन्ध्रेशादियोगे लाभहीनः ॥ ६४ ॥ —

लग्नसे ग्यारहवें घरमें शुक्र हो तो पण्डित, बहुत धनवाला पृथ्वी प्राप्त करनेवाला, और दयालु होता है. शुक्रके साथ शुभग्रह युक्त हो तो अनेक वाहन प्राप्त होते हैं । यदि पापग्रह युक्त हो तो पाप करनेसे धन मिलता है। और शुभग्रह बैठे हों तो शुभ कार्य करनेसे धन प्राप्त हो, यदि शुक्र नीच राशि (कन्या) में अथवा पापग्रह और अष्टम स्थानके स्वामीसे युक्त हो तो धनका लाभ नहीं होता है ॥६२-६४॥

लग्नाद्द्वादशे भृगुफलम्

बहुलदारिद्र्यवान् ॥६५॥ पापयुते विषयलुब्धपरः ॥ ६६ ॥ शुभयुक्तश्चेत् बहुधनवान् ॥ ६७ ॥ शय्या-खट्वाङ्गादिसौख्यवान् शुभलोकप्राप्तिः पापयुते नरक-प्राप्तिः ॥ ६८ ॥

लग्नसे बारहवें भावमें शुक्र हो तो अत्यन्त दरिद्री होता है। शुक्र के साथ पाप ग्रह बैठे हों तो भोगादि विषयमें लोभवाला हो । यदि शुभग्रह युक्त हो तो बहुत धनवाला हो । और पलंग

आदिका पूर्ण सुखवाला हो एवं स्वर्गलोक प्राप्त करनेवाला हो, यदि पाप ग्रह बैठे हों तो नरक प्राप्त होता है ॥ ६५–६८ ॥

इति श्रीभृगुसूत्रे सिद्धप्रभाकरीटीकाभियुक्ते
शुक्रभावाध्यायनामषष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अथ तन्वादिद्वादशभावस्थितशनिफलमाह

तत्रादौ लग्ने शनिफलम्

वातपित्तदेहः ॥१॥ उच्च पुरग्रामाधिपः धन धान्य समृद्धिः॥२॥ स्वर्क्षे पितृधनवान्॥३॥वाहनेशकर्मेशक्षेत्र बहुभाग्यम् ॥ ४ ॥ महाराजयोगः॥ ५ ॥ चन्द्रमसा दृष्टे भिक्षुकी वृत्तिः ॥ ६ ॥ शुभदृष्टे निवृत्तिः ॥ ७ ।

शनि लग्नमें हो तो वात पित्त प्रकृतिवाला हो शनि उच्च (तुला) राशिका हो तो नगर और धनधान्यसे भी समृद्धिशाली होता है। अथवा ग्रामका मालिक हो शनि अपनी राशि (मकर कुम्भ)का हो तो पिता धनवान् हो। चतुर्थ दशमके स्वामीकी राशिका शनि जन्म लग्नमें हो तो बडा भाग्यवान् हो। और प्रबल राजयोगवाला हो, शनिको चन्द्रमाकी दृष्टि होनेपर भीख मांगनेकी वृत्तिवाला हो, शुभग्रहकी दृष्टिसे भिक्षुक न हो ॥ १ ॥ ७ ॥

लग्नाद्द्वितीये शनिफलम्

द्रव्याभावः दारिद्रयम् ॥ ८ ॥ पापयुते दारवञ्चना-मठाधिपः अल्पक्षेत्रवान् नेत्ररोगी ॥ ९ ॥

लग्नसे दूसरे स्थानमें शनि हो तो धनसे रहित हो तथा दो स्त्री वाला होता है । शनिके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो स्त्रियोंको ठगनेवाला एवं मठाधीश अल्पस्थानवाला और नेत्रमें रोग वाला होता है ॥ ८ ॥ ९ ॥

लग्नात्तृतीये शनिफलम्

भ्रातृहानिकारकः ॥ १० ॥ अदृष्टः दुर्वृत्तः ॥ ११ ॥ उच्चस्वक्षेत्रे भ्रातृवृद्धिः ॥ १२ ॥ तत्र पापयुते भ्रातृद्वेषी ॥ १३ ॥

लग्नसे तीसरे भावमें शनि हो तो भाइयोंकी हानि करनेवाला हो । दुःखचित्तवाला और नीचकर्म करनेवाला होता है । यदि शनि उच्च (तुला) का हो अथवा अपने स्थान (मकर कुम्भ) का हो तो भाईयोंकी वृद्धि हो शनिके साथ पाप ग्रह युक्त हो तो भाइयोंसे द्वेष करनेवाला शत्रु होता है ॥ १० ॥ १३ ॥

लग्नाच्चतुर्थे शनिफलम्

मातृहानिः द्विमातृवान् ॥ १४ ॥ सौख्यहानिः निर्धनः ॥१५॥ उच्चस्वक्षेत्रे न दोषः ॥१६॥ अश्वान्दीलाश्ववरोही ॥ १७ ॥ लग्नेशे मन्दे मातृदीर्घायुः ॥ १८ ॥ सौख्यवान् ॥ १९ ॥ रन्ध्रेशयुक्ते मातारिष्टम् ॥ २० ॥ सुखहानिः ॥ २१ ॥

लग्नसे चतुर्थ स्थानमें शनि हो तो माताकी हानि करनेवाला और दो मातावाला होता है सुखसौख्यसे हीन होकर शरीरमें कष्ट हो और धनसे हीन हो। शनि उच्च (तुला)का व अपने स्थान (मकर कुम्भ) में हो तो यह दोष नहीं होता अर्थात् सुखी तथा धनी होता है और घोड़ा पालकी आदिकी सवारी प्राप्त हो। लग्नका स्वामी शनि हो तो माता दीर्घायु होती है। और सुखी होता है। शनिके साथ अष्टमस्थानका स्वामी बैठा हो तो माताको अरिष्टवाला होता है एवं शरीरमें कष्ट होता है ॥ १४ ॥ २१ ॥

लग्नात्पञ्चमे शनिफलम्

पुत्रहीनः अतिदरिद्री दुर्वृत्तः दत्तपुत्री ॥ २२ ॥ स्वक्षेत्रे स्त्रीप्रजासिद्धिः ॥ २३ ॥ गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम् ॥ २४ ॥ तत्र प्रथमाऽपुत्रा द्वितीया पुत्रवती ॥२५॥ बलयुते मन्दे स्त्रीभिर्युक्तः ॥ २६ ॥

लग्नसे पांचवें घरमें शनि हो तो पुत्रसे रहित हो, म्लेच्छतासे रहनेवाला, नीचवृत्तिवाला और दूसरेकी दी हुई पुत्रीवाला होताहै शनि अपने स्थान (मकर कुंभ) में हो तो कन्यासन्तानवाला होता है। शनिको बृहस्पति देखता हो तो दो स्त्रीवाला हो।

उनमें प्रथम स्त्री सन्तानसे हीन हो द्वितीय पुत्रवती होती है। शनि बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो तो स्त्रियोंसे युक्त होता है॥२२-२६॥

लग्नात्षष्ठे शनिफलम्

अल्पज्ञातिः शत्रुक्षयः ॥ २७ ॥ धनधान्यसमृद्धः कुजयुते देशान्तरसञ्चारी ॥ २८ ॥ अल्पराजयोगः ॥२९॥ भङ्गयोगात्क्वचित्सौख्यंक्वचिद्योगभङ्गः ॥३०॥ रन्ध्रेशे मंदे अरिष्टं वातरोगी शूलव्रणदेही ॥ ३१ ॥

जन्मलग्नसे छठवें स्थानमें शनि हो तो छोटी जातिका हो और शत्रु नष्ट हो जाते हैं। धन धान्यसे युक्त हो, शनिके साथ मङ्गल युक्त हो तो देशान्तरोंमें घूमनेवाला हो और किञ्चित् राज योग हो कभी राजयोगके भङ्गसे सुख हो। शनि अष्टम स्थानका स्वामी हो तो वात तथा शूलरोगसे शरीरमें अरिष्ट होता है और घाव भी होते हैं॥ २७ ॥ ३१ ॥

लग्नात्सप्तमे शनिफलम्

शरीरदोषकरः कृशकलत्रः वेश्यासम्भोगवान् अति दुःखी उच्चस्वक्षेत्रगते अनेकस्त्रीसम्भोगी ॥ ३२ ॥ केतुयुते स्त्रीसम्भोगी ॥ ३३ ॥ कुजयुते शिश्नचुम्ब-

नपरः ॥ ३४ ॥ शुक्रयुते भगचुम्बनपरः ॥ ३५ ॥ परस्त्रीसम्भोगी ॥ ३६ ॥

लग्नसे सातवेंभावमें शनि हो तो शरीर दोष युक्त हो, दुर्बल स्त्रीवाला, वेश्यासे भोगकरनेवाला, और अत्यन्त दुःखी हो, शनि उच्च (तुलामें) अथवा अपने स्थान (मकर कुम्भ) में हो तो अनेकों स्त्रियोंसे भोग करनेवाला होता है। शनिके साथ केतु युक्त हो तो स्त्रीसे भोगकरनेवाला हो। मङ्गल युक्त हो तो लिङ्गको चुम्बन करनेवाला हो शुक्र युक्त हो तो भगको चुम्बन करनेवाला हो। और पराई स्त्रीसे भोग करने वाला होता है ॥ ३२ ॥ ३६ ॥

लग्नादष्टमे शनिफलम्

त्रिपादायुः दरिद्री शूद्रस्त्रीरतः सेवकः ॥ ३७ ॥ उच्चस्वक्षेत्रे दीर्घायुः ॥ ३८ ॥ अरिनीचगे भावाधिपे अल्पायुः ॥ ३ ॥ कष्टान्नभोगी ॥ ४० ॥

लग्नसे आठवें भवनमें शनि हो तो ७५वर्षकी आयुवाला, दरिद्री शूद्रकी स्त्रीसे भोग करनेवाला और नौकर होता है। शनि उच्च (तुला) का अथवा अपने स्थान (मकर कुम्भ) में हो तो दीर्घायुवाला हो। अष्टमस्थानका स्वामी शत्रु तथा नीच (मेष) में हो तो अल्पायु हो। और दुःखसे अन्नको खानेवाला होता है ॥ ३७ ॥ ४० ॥

लग्नान्नवमे शनिफलम्

पतितः जीर्णोद्धारकरः एकोनचत्वारिंशद्वर्षे तटाकगोपुरनिर्माणकर्ता ॥४१॥ उच्च स्वक्षेत्रे पितृदीर्घायुः ॥ ४२ ॥ पापयुते दुर्बले पित्ररिष्टवान् ॥ ४३ ॥

लग्नसे नौवेंभावमें शनि हो तो भ्रष्ट हो, और प्राचीन वस्तुका उद्धार करनेवाला तथा ३९ वर्षमें घाट, गौग्राम आदि बनानेवाला होता है। शनि उच्च (तुला) का व अपने स्थान (मकर कुम्भ) में हो तो पिताकी दीर्घायु हो। शनि पापग्रहसे युक्त हो तथा बलहीन हो तो पिताको अरिष्ट होता है ॥ ४१-४३ ॥

लग्नाद्दशमे शनिफलम्

पञ्चविंशतिवर्षे गङ्गास्नायी अतिलुब्धः पित्तशरीरी ॥४४॥पापयुते कर्मविघ्नकरः शुभयुते कर्मसिद्धिः ४५

लग्नसे दशवें भवनमें शनि हो तो २५ वर्षमें श्रीगङ्गाजीका स्नान करनेवाला, अत्यन्त लोभी, और पित्तशरीरवाला होता है। शनिके साथ पापग्रह बैठे हों तो कार्यमें विघ्न करनेवाला हो, यदि शुभ ग्रहयुक्त हो तो कार्य सिद्ध करनेवाला होता है ॥४४॥४५॥

लग्नादेकादशे शनिफलम्

बहुधनी विघ्नकरः भूमिलाभः राजपूजकः ॥४६॥

उच्चे स्वक्षेत्रे वा विद्वान् ॥ ४७ ॥ महाभाग्ययोगः बहु धनी वाहनयोगः ॥ ४८ ॥

लग्नसे ग्यारहवें घरमें शनि हो तो बडा धनी, कार्यमें विघ्न करनेवाला और पृथ्वीका लाभ वाला तथा राजाकी सेवा करनेवाला, होता है। शनि उच्च (तुला) का अथवा अपने स्थान (मकर कुम्भ) का हो तो पण्डित होता है। और बडा भाग्यवाला अत्यन्त धनवाला, और सवारी प्राप्त होती है॥ ४६-४८ ॥

लग्नाद्द्वादशे शनिफलम्

पतितः विकलाङ्गः ॥ ४९ ॥ पापयुते नेत्रच्छेदः ॥ ५० ॥ शुभयुते सुखी सुनेत्रः पुण्यलोकप्राप्तिः ॥ ५१ ॥ पापयुते नरकप्राप्तिः ॥ ५२ ॥ अपात्रव्ययकारी निर्धनः ॥ ५३ ॥

लग्नसे बारहवेंघरमें शनि हो तो भ्रष्ट हो, और अङ्गसे हीन होता है। शनिके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो नेत्रमें छिद्र हो। शुभ ग्रह हों तो सुखी सुन्दर नेत्रवाला, और स्वर्गलोक प्राप्त होता है। शनिके साथ पाप ग्रह युक्त हो तो नरक प्राप्त होता है। और दुष्टजगह खर्च करनेवाला तथा द्रव्यसेहीन (कंगाल) होता है ॥ ४९-५३ ॥

इतिश्रीभृगुसूत्र सिद्धप्रभाकरीटीकाभियुक्तेशनिभावाध्यायनामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ तन्वादिद्वादश भाव स्थितराहुकेत्वोः फलमाह ।

तत्रादौ लग्ने राहुकेत्वोः फलम्

मृतप्रसूतिः ॥१॥ मेषवृषभकर्कराशिस्थे दयावान् ॥ २ ॥ बहुभोगी ॥ ३ ॥ अशुभ शुभदृष्टे मुखलाञ्छनी ॥ ४ ॥

जन्मलग्नमें राहु केतुहो तो मरी हुई सन्तान हो। यदि राहु केतु मेष वृष कर्क इन राशियोंमें बैठे हों तो दयालु होता है । और अत्यन्त भोगी होता है । राहु केतुको शुभ अथवा पाप ग्रह देखते हों तो मुखमें चिह्नवाला होता है ॥ १-४ ॥

लग्नाद्द्वितीये राहुकेत्वोः फलम्

निर्धनः देहव्याधिः पुत्रशोकः श्यामवर्णः ॥ ५ ॥ पापयुते चुबुके लाञ्छनम् ॥ ६ ॥

लग्नसे दूसरे स्थानमें राहु केतु हों तो धनसे हीन हो शरीरमें रोगवाला पुत्रकी चिन्ता करनेवाला और काला रंगवाला होताहै । राहु केतुके साथ पाप ग्रह बैठे हों तो ओष्ठपर चिह्न होता है ॥५॥ ६॥

लग्नात्तृतीये राहुकेत्वोः फलम्

तिलनिष्पावमुद्गकोद्रवसमृद्धिवान् ॥ ७ ॥ शुभयुते कण्ठलाञ्छनम् ॥ ८ ॥

लग्नसे तीसरे भवनमें राहु केतु हों तो तिल निष्पाव मूंग कोद्रव इन धान्योंवाला हो। राहु केतुके साथ शुभ ग्रह बैठे हों तो कण्ठ में कोई चिह्न होता है ॥ ७ ॥ ८ ॥

लग्नाच्चतुर्थे राहुकेतुफलम्

बहुभूषणसमृद्धः जायाद्वयं सेवकः मातृक्लेशः पाप युते निश्चयेन ॥ ९ ॥ शुभयुतदृष्टे न दोषः ॥ १० ॥

लग्नसे चौथेभावमें राहु केतु हों तो बहुत आभूषणोंवाला दो स्त्रीवाला और नौकर होता है, यदि राहुकेतुके साथ पाप ग्रह युक्त हो तो निश्चय करके माताको दुःख हो। शुभ ग्रह युक्त हों व देखते हों तो उक्त फल नहीं होता है अर्थात् माताका अच्छा सुख होता है ॥ ९ ॥ १० ॥

लग्नात्पञ्चमे राहुकेत्वोः फलम्

पुत्राभावः सर्पशापात् सुतक्षयः ॥ ११ ॥ नागप्रतिष्ठया पुत्रप्राप्तिः ॥ १२ ॥ पवनव्याधिः दुर्मार्गी राजकोपः दुष्टग्रामवासी ॥ १३ ॥

लग्नसे पांचवेंघरमें राहु केतु हों तो पुत्रसे हीन हो सर्पके शापसे पुत्रका नाश हो। नागदेवकी प्रतिष्ठाकरनेसे पुत्र सुख प्राप्त हो। वायुसे रोग उत्पन्न हो, खराब मार्गमें जानेवाला, राजासे क्रोध करनेवाला और नीच ग्राममें निवास करनेवाला होता है ॥ ११-१३ ॥

लग्नात्षष्ठे राहुकेत्वोः फलम्

धीरवान् अतिसुखी ॥ १४ ॥ इन्दुयुते राजस्त्री-भोगी ॥ १५ ॥ निर्धनः चौरः ॥ १६ ॥

लग्नसे छठें स्थानमें राहु केतु हो तो गम्भीर और अत्यन्त सुखी होता है। राहु केतुके साथ चन्द्रमा युत हो तो राजाकी स्त्रीसे भोग करनेवाला हो। धनसे हीन और चोर होता है ॥ १४-१६ ॥

लग्नात्सप्तमे राहुकेत्वोः फलम्

दारद्वयं तन्मध्ये प्रथमस्त्रीनाशः द्वितीये कलत्रे गुल्मव्याधिः ॥ १७ ॥ पापयुते गण्डोत्पत्तिः ॥१८॥ शुभयुते गण्डनिवृत्तिः ॥ १९ ॥ नियमेन दारद्वयम् ॥ २० ॥ शुभयुते एकमेव ॥ २१ ॥

लग्नसे सातवें स्थानमें राहु केतु हो तो दो स्त्रीवाला हो जिसमें पहिली स्त्रीका नाश हो, दूसरी स्त्रीको गुल्म रोग हो। राहु केतुके साथ पापग्रहयुक्त हो तो गण्डमालारोग हो। शुभग्रहयुक्त होनेपर यह दोष दूर हो जाता है। और हमेशा दो स्त्रीवाला होता है, राहु केतुके साथ शुभग्रह युक्त हो तो एकही स्त्रीवाला होता है॥१७-२१॥

लग्नादष्टमे राहुकेत्वोः फलम्

अतिरोगी द्वात्रिंशद्वर्षायुष्मान् ॥ २२ ॥ शुभयुते

पञ्चचत्वारिंशद्वर्षे भावाधिपे बलयुते स्वोच्चेषष्टिवर्षाणि-वा जीवितम ॥ २३ ॥

लग्नसे आठवेंभावमें राहु केतु हों तो अत्यन्त रोगी हो और २२ वर्षकी आयुवाला हो । राहुकेतुके साथ शुभ ग्रह युक्त हों तो ४५ वर्षकी आयु हो, अष्टम स्थानका स्वामी बलवान् ग्रहोंसे युक्त हो अथवा अपनी उच्चराशिमें हो तो ६०वर्षकी आयुवाला होता है ॥ २२ ॥ २३ ॥

लग्नान्नवमे राहुकेत्वोः फलम्

पुत्रहीनः शूद्रस्त्रीसम्भोगी सेवकः धर्महीनः ॥२४॥

लग्नसे नवम स्थानमें राहु केतु हों तो पुत्रसे हीन शूद्रकी स्त्रीसे भोगकरनेवाला व सेवा करनेवाला और धर्मसे रहित होता है॥२४॥

लग्नाद्दशमे राहुकेत्वोः फलम्

वितन्तुसङ्गमः ॥ २५ ॥ दुर्ग्रामवासः ॥ २६ ॥ शुभयुते न दोषः ॥ २७ ॥ काव्यव्यसनः ॥ २९ ॥

लग्नसे दशेंवघरमें राहु केतु हों तो * विधवासे संगम करनेवाला हो । नीच ग्राममें रहनेवाला हो । राहुकेतुके साथशुभ ग्रह बैठे हों तो सुन्दर ग्राममें निवास करनेवाला होता है, और काव्यशास्त्रको पढनेवाला होता है ॥ २५-२८ ॥

---

* कपड़ा बनानेवाला-ऐसा भी कोई २ अर्थ करते हैं.

लग्नादेकादशे राहुकेत्वोः फलम्

पुत्रैः समृद्धः ॥ २९ ॥ धनधान्यसमृद्धः ॥ ३० ॥

लग्नसे ग्यारहवें भवनमें राहु केतु हों तो पुत्रोंसे युक्त हो, और धन धान्यसे भी युक्त होता है ॥ २९ ॥ ३० ॥

लग्नाद्द्वादशे राहुकेत्वोः फलम्

अल्पपुत्रः ॥ ३१ ॥ नेत्ररोगी पापगतिः ॥ ३२ ॥

लग्नसे बारहवें स्थानमें राहु केतु हो तो थोडे पुत्रवाला हो । और नेत्रमें रोगवाला एवं नीच गतिवाला होता है ॥ ३१ ॥ ३२

अथ विनयपूर्वकटीकाकारपरिचयः

श्रीसिद्धनाथेन सुदेवविज्ञे-
नाख्यातरत्नलामकमण्डले वा ।
वस्तिः सुखेडास्ति च तत्र जाते-
नानिर्मिता वै भृगुसूत्रटीका ॥ १ ॥
अत्र भ्रमाद्या त्रुटिरागता सा
संशोध्य विज्ञैः परिपूरणीया ।
श्रीनारदाद्यैरपि दुःशकं यत्
तत्राल्पविन्मादृशवित्कथाका ॥ २ ॥

टीकासमाप्तिसमयः-

माघे सितेऽर्केऽहितिथौ सुपञ्च-
म्यां त्र्यष्टगोभूमितवैक्रमाब्दे । [१९८३]
जिज्ञासुमुद्दं भृगुसूत्रकंयत्
सिद्धप्रभाकर्यभियुक्तजातम् ॥ ३ ॥

इति श्रीभार्गवीये-सुखेड़ाग्राम वास्तव्यकाशीस्थगवर्नमेन्ट संस्कृत महाविद्यालयपरीक्षोत्तीर्ण स्वर्गीय पं श्रीरेवाशंकरात्मज, राजज्योतिषी रमलशास्त्री" अग्निहोत्री नागदा" पण्डित श्रीसिद्धिनाथ शर्मकृतसिद्धिप्रभाकरी टीकाभियुक्ते राहुकेतु भावाध्याय नामा ष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

समाप्तोऽयंग्रन्थः

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्--प्रेस.
कल्याण–बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्--प्रेस,
खेतवाड़ी--बम्बई.

॥ अथ ग्रहाणां स्वक्षेत्र मित्रशत्रूच्चराश्यादि बोधक चक्रमिदम् ॥

ग्रहाणांनाम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शुभपापग्रहाः	पाप	शुभ	पाप	शुभ.	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप
राशिनाम	मेष वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह कन्या	तुला	वृश्चिक धन	मकर कुम्भ	मीन	०
ग्र.स्वक्षेत्राणि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धन मीन	वृषभ तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन
मित्रग्रहाः	च. म. गु.	सू. बु.	सू.गु.चं.	सू. रा. शु.	सू.चं.मं.	बु रा. श.	बु. रा. शु.	बु.श.शु.	बु.
समग्रहाः	बु.	मं. शु गु. श.	शु. श.	मं.श.गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०
शत्रुग्रहाः	श. रा. शु.	राहु	बु. रा.	चं.	बु श	सू. चं.	सू. चं.मं.	सू.चं.मं.	०
उच्चराशयः परमोच्चांशाः	मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	-	मीन २७	तुला २०	मिथुन ०	०
नीचराशयः नीचांशाः	तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धन ०	०
ग्रहाणाम् एकपाददृष्टिः	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०१	३।१०	३।१०

द्विपाददृष्टिः	५।९	५।९	५।९	५।९	००	५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाददृष्टिः	४।८	४।८	००	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
सम्पूर्णदृष्टिः	७	७	४।८।७	७	५।९।७	७	३।१०।७	७	७
विंशोतरीदशा प्रदनक्षत्राणि	कृ. उफा. उषा.	रो.ह.श्र.	मृ. चि. ध.	आश्लेषा ज्ये. रे.	पुन वि. पू. भा.	भ.पूफा. पूषा.	पुष्य अनु उ. भा.	आर्द्रा स्वा, श.	म.मू. अश्वि.
विंशोतरीदशा वर्षाणि	६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७
योगिनीदशा वर्षाणि	मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रा ५	उल्का ६	सिद्धा: ७	सकंटा ८	०
यो द. प्र. नक्षत्राणि	श्र. आर्द्रा चि.	ध. पुन. स्वा.	श. पुष्य वि.	पू. भा. आ. आश्ले. अनु	भ.म.ज्ये उ.भा.	कृ. पूफा. मू रे.	रो उफा. पू. श्रा.	मृ. ह. उ. षा.	०
ग्र. पु. स्त्री. न.	पुरुष	स्त्री.	पुरुष	नपुसक	पुरुष	स्त्री.	स्त्री	पुरुष	पुरुष
ग्रहाणां वर्षाणि	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२
नेष्ट ग्रहवर्ष-दानादि	हरिवंश श्रवण	रुद्राचन अभिषेक	रुद्रीजप	कांस्यदान	अमावस्या व्रत	गौ सेवा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजादान	ध्वजा दान

॥ अथ चमत्कारिक केरल सिद्ध प्रश्नावली ॥

प्रातःकाले वदेत्पुष्पं मध्याह्ने तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्नद्यःरात्रौतु देवतां वदेत् ॥१॥

अष्टवर्गाः	ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष
प्रश्नाक्षराणि	स्वर अ.इउएओ	कवर्ग कखगघङ	चवर्ग चछजझञ	टवर्ग टठडढण	तवर्ग तथदधन	पवर्ग पफबभम	यवर्ग यरलव	शवर्ग शषसह
प्रश्ननिर्णयः	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति
मूकप्रश्नः	धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव
आयुप्रश्न	१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	४५ वर्ष	७५ वर्ष	१६ वर्ष
सुखदुःख प्रश्न	सुख	दुःख	सुख	दुःख	सुख	दुःख	सुख	दुःख
लाभालाभप्रश्न	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि
पुत्रकन्या प्रश्न	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या
विद्याप्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति
कार्यसिद्धि प्रश्न	स्थिर	न सिद्धि	शीघ्रसिद्धि	अतिविलंब	शीघ्र	अतिविलंब	स्थिर	न सिद्धि
व्यवहारप्रश्न	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह
व्यापार लाभहानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि
रोगी प्रश्न	आरोग्य	संकट	सुख	कष्ट	आरोग्य	कष्ट	सुख	दुःखं
कष्ट दिन	७ दिन	२ मास	१५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास
प्रवासी प्रश्न	कुशल	रोगी	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	कुशल	रोगी
प्रवासीर स्थिर	समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत
प्रवासीगमागम	समीप	समीप	दूर	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत
शत्रुगमागमौ	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम
जयपराजय प्रश्न	जय	पराजय	जय	पराजय	जय	पराजय	अजय	पराजय
वृष्टिप्रश्न	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	उत्तम	न वर्षा	उत्तम	न वर्षा
वृष्टिदिनानि	२७	७	३०	२०	१०	६०	३०	६०
धनलाभप्रश्न	प्राप्ति	व्यय	प्राप्ति	हानि	लाभ	व्यय	प्राप्ति	हानि
मुष्टिप्रश्न	पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प
मुष्टिवर्ण	कौसुम्भ	श्वेत	लोहितांग कृष्ण	पांडुनील	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र
धान्यज्ञान	गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणे	गुड़	यव
नष्टवस्तुलाभ प्रश्न	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि
नष्टदिशा ज्ञान	पूर्व	आग्नेयकोण	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान
चौर जाति	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	भील	नाई
नष्ट वस्तु स्थान	उखलमें	भोजनालयमें	वनमें	अन्तरिक्षमें	बरतनमें	काष्ठ पात्रमें	घर में	पृथ्वीके भीतर
परीक्षोत्तीर्ण प्रश्न	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
भाग्योदयविचार	उत्तम	नेष्ट	उत्तम	नेष्ट	उत्तम	नेष्ट	उत्तम	नेष्ट
उच्चपदप्राप्ति प्रश्न	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति	प्राप्ति	न प्राप्ति
बन्दीमोक्ष प्रश्न	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष	न मोक्ष	मोक्ष
सर्व कार्यावधि ज्ञान	७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष
देवपूजा	कुलदेव	दुर्गा	सूर्य	हनुमत	शिव	सरस्वती	गणपति	पितृदेव

❀ उपरोक्त प्रश्नावलीके प्रश्न देखनेकी सरल विधिः—

यदि प्रश्नकर्ता प्रातःकाल सूर्योदय से ११ बजे तक प्रश्न करे तो पूर्वोत्तर दिशामें प्रश्नकर्ता का मुख रखा कर उनके इष्टदेव तथा प्रश्नका ध्यान कराते हुये किसी भी पुष्पका नाम मुखसे बोलाना, मध्याह्न में (११ बजेसे ३ बजे तक) फल का नाम, सायंकाल (३ बजेसे सूर्यास्तपर्यंत) नदी का नाम एवं रात्रिमें किसी देवताका नाम उच्चारण करवाना चाहिये। पुष्प, फल, नदी, देवता इनका पहिला अक्षर ग्रहण करके वो वर्ण अष्टवर्गोंमें जहां हो उस वर्गसे नीचे एवं प्रश्न कोष्ठक के बायें ओर जहां पर दोनोंका सम्मेलन हुआ है वही प्रश्नका फल जानना।

उदाहरणः—जैसे किसीने दिनके ५ बजे आकर प्रश्न पूछा कि मुकदमे में मेरी जीत होगी ? तब सायंकाल होनेसे प्रश्नकर्ताके मुखसे नदी का नाम उच्चारण करवाया तो उसने "नर्मदा" नदीका नाम कहा—इसका पहिला अक्षर 'न' है यह वृष वर्ग के तवर्ग में है, अतः इसके नीचे और जय पराजय प्रश्न कोष्ठक के बांई ओर दोनों के सम्मिलन में 'जय' फल लिखा है। अतएव प्रश्नकर्ता की इस मुकदमें में निश्चय रूपसे विजय होगी। इसी तरह सम्पूर्ण प्रश्नोंका फल समझना।

द्विपाददृष्टिः	५।९	५।९	५।९	५।९	००	५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाददृष्टिः	४।८	४।८	००	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
सम्पूर्णदृष्टिः	७	७	४।८।७	७	[illegible]	७	३।१०।७	७	७

1000—10—66